दैनिक

क्षितिज किरण

त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे

आरएनआई क्र.MPHIN/2012/40924

प्रेरणापुंज- विचित्र कुमार सिन्हा -- ब्यूरो प्रमुख भोपाल- विलक्षण सक्सेना

जबलपुर, होशंगाबाद एवं सीहोर से एक साथ प्रकाशित एकमात्र निर्भीक समाचार-पत्र

प्रधान सम्पादक-कृष्णकान्त सक्सेना वर्ष-14, अंक -71 जबलपुर, सोमवार 14 अप्रैल 2025 कीमत-70 पैसे पृष्ठ-8 संपादक अरुण श्रीवास्तव

वक्फ कानून पर बंगाल में हिंसा

धुलियान से 500 लोगों का पलायन, मालदा के स्कूल में शरण ली; आरोप- पानी में जहर मिलाया

मुर्शिदाबाद-(आरएनएस)। वक्फ कानून के विरोध में शनिवार को पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद, नॉर्थ 24 परगना, हुगली और मालदा जिलों में हिंसक विरोध प्रदर्शन हुए। वाहनों को आग लगाई और दुकानों-घरों में तोड़फोड़ कर लूट भी की गई। अबतक 3 लोगों की मौत हो चुकी है। 15 पुलिसकर्मी घायल हैं। 150 लोग गिरफ्तार किए गए हैं।

केंद्र सरकार ने पश्चिम बंगाल के हिंसाग्रस्त इलाकों में 1600 जवान तैनात किए हैं। 300 के करीब जवान हैं। कुल 21 कंपनियां की तैनात की गई हैं। हिंसाग्रस्त वाले इलाकों में इंटरनेट बैन है। धारा 144 भी लागू है। राज्य में वक्फ कानून के विरोध में 10 अप्रैल से हिंसा जारी है।

इधर, मुर्शिदाबाद के धुलियान से करीब 500 लोग पलायन कर गए हैं। इन सभी ने नदी पार मालदा के वैष्णवनगर में एक स्कूल में शरण ली है। इन लोगों का आरोप है कि उनके घरों में तोड़फोड़-आगजनी की गई। पीने के पानी में जहर मिला दिया गया है। ये किसी तरह बीएसएफ की मदद से वहां से बचकर आए हैं।

नए वक्फ कानून को लेकर दिल्ली में जमीयत उलेमा-ए-हिंद की कार्यकारी समिति ने एक बैठक की। वहीं चीफ असदुद्दीन ओवैसी ने आज कहा- वक्फ कानून असंवैधानिक है। वक्फ बोर्ड पर कब्जा करना चाहती है। वक्फ कानून से किसी की भलाई नहीं होगी।

सांसद और पूर्व क्रिकेटर यूसुफ पठान ने चाय पीते हुए पोस्ट शेयर की, जिसपर विवाद हो रहा है। प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा- बंगाल जल रहा है। पुलिस चुप है। इन सबके बीच सांसद यूसुफ पठान चाय की चुस्की लेते हुए हिंदुओं के कत्लेआम के पल का आनंद ले रहे हैं।

बंगाल बीजेपी का यूसुफ पठान और ममता बनर्जी पर तीखा हमला

सांसद चाय की चुस्की ले रहे हैं और राज्य खून से लथपथ है

पश्चिम बंगाल-(आरएनएस)। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद समेत कई इलाकों में हुई हिंसा में एक तरफ तीन लोगों की मौत हो गई है और संपत्ति का भारी नुकसान हुआ है, वहीं दूसरी तरफ राज्य सरकार के सांसद यूसुफ पठान अपनी ही दुनिया में खोए हुए हैं। हिंसा के एक दिन बाद, पठान ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर चाय पीते हुए अपनी कुछ तस्वीरें शेयर कीं, जिस पर विवाद खड़ा हो गया। भाजपा ने रविवार को पठान की पोस्ट को लेकर ममता बनर्जी और उनकी पार्टी पर निशाना साधा है।

दरअसल, पठान ने शनिवार को इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट में अपनी कुछ तस्वीरें शेयर कीं, जिसके कैप्शन में उन्होंने लिखा, आरामदायक दोपहर, अच्छी चाय और शांत माहौल। बस इस पल का आनंद ले रहे हैं। पठान बहरामपुर से तृणमूल सांसद हैं। उनके जिले के कई हिस्सों में वक्फ एक्ट को लेकर अशांति है। यही वजह है कि उनकी तस्वीरों पर विवाद खड़ा हो गया।

सांसद और पूर्व क्रिकेटर यूसुफ पठान ने चाय पीते हुए पोस्ट शेयर की, जिसपर विवाद हो रहा है। प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा- बंगाल जल रहा है। पुलिस चुप है। इन सबके बीच सांसद यूसुफ पठान चाय की चुस्की लेते हुए हिंदुओं के कत्लेआम के पल का आनंद ले रहे हैं।

पश्चिम बंगाल में नेता विपक्ष सुवेंदु अधिकारी ने कलकत्ता हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी, जिसमें केंद्रीय बल की तैनाती और हिंसा की जांच ह्ढ्ढ से कराने की मांग की थी। हाईकोर्ट ने हिंसाग्रस्त इलाकों में केंद्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती के आदेश दिए। जस्टिस सौमेन सेन की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा- हम उन रिपोर्ट्स पर आंखें मूंद नहीं सकते जो सामने आई हैं। इनमें राज्य के कुछ जिलों में बर्बरता दिखाई देती है। मुर्शिदाबाद के अलावा जहां भी हिंसा नजर आती है, वहां केंद्रीय सुरक्षा बल की तैनाती की जाए।

प्रकाश-स्टील-प्लांट में 70प्रति. तक झुलसे कर्मचारी, कई गंभीर

छत्तीसगढ़-13 मजदूरों पर गिरा खौलता लावा

रायपुर.(आरएनएस)। छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा जिले में प्रकाश इंडस्ट्रीज के स्टील प्लांट में फर्नेस ब्लास्ट हुआ है. 15 टन क्षमता वाली पुरानी फर्नेस में ब्लास्ट से 13 मजदूर 70 फीसदी से ज्यादा झुलस गए हैं. इनमें से 4 की हालत गंभीर है. 3 मजदूरों को रायपुर के नारायणा अस्पताल में आईसीयू में रखा गया है. घटना चांपा थाना क्षेत्र की है. मिली जानकारी के अनुसार सभी मजदूर दूसरी शिफ्ट में काम कर रहे थे, तभी ब्लास्ट के दौरान गर्म लावा की चपेट में आ गए. हादसे में मजदूरों की चमड़ी तक उधड़ गई है. जांजगीर एसपी विवेक शुक्ला ने कहा कि ब्लास्ट का कारण अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है. जांच की जा रही है.

ऐसे हुआ हादसा ?

दरअसल, शनिवार को करीब 4 बजे 15 टन के ओल्ड फर्नेस में डोलोमाइट स्टोन को पिघलाया जा रहा था. फर्नेस से पिघले हुए लावा को सेप देकर स्टील बनाया जाता है. ओल्ड फर्नेस में पहले से ही समस्या थी. साथ ही उसी फर्नेस में मेंटेनेंस का भी काम चल रहा था, तभी अचानक धमाका हो गया. इस ब्लास्ट से मजदूर बुरी तरह से जख्मी हो गए. खौलते लावा की चपेट में आने से किसी के हाथ, तो किसी के पैर और शरीर के अन्य हिस्सों से चमड़ी तक उधड़ गई है. मजदूरों को ज्यादा जल जाने की वजह से बिलासपुर और रायपुर के अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया है.

हिमाचल प्रदेश की मंडी में 3.4 तीव्रता का भूकंप से हड़कम्प

मंडी- रविवार 13 अप्रैल को हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले में रिक्टर पैमाने पर 3.4 तीव्रता का भूकंप आया. राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (एनसीएस) के अनुसार,मंडी में सुबह करीब 9.18 बजे 5 किलोमीटर की गहराई पर झटके महसूस किए गए. एनसीएस ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, भूकंप की तीव्रता 3.4, दिनांक 13/04/2025 09:18:25 ढ्ढस्ञ्ज, अक्षांश 31.49 ह्न, देशांतर 76.94 श्व, गहराई 5 किमी, स्थान मंडी, हिमाचल प्रदेश.

2 लोगों से भरी पिकअप नहर में गिरी, 5 लापता, इनमें 2 बच्चे और 3 महिलाएं, रेस्क्यू जारी

कोरबा.(आरएनएस)। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में तेज रफ्तार पिकअप पलटकर नहर में गिर गई. इस दौरान नहर के तेज बहाव में 2 बच्चे और 3 महिलाएं बह गई हैं, जबकि 5 लोगों ने नहर से निकलकर अपनी जान बचाई. मामला उरगा थाना क्षेत्र के बमड़वारानी जर्वे के पास का है.

मिली जानकारी के मुताबिक करीब 12 लोग पिकअप पर सवार होकर सक्ती जिले के ग्राम रेडा से मुकुंदपुर जा रहे थे. इसी दौरान पिकअप सवार हादसे का शिकार हो गए. पिकअप चालक गाड़ी को छोड़कर मौके से भाग निकला है. वहीं हादसे की सूचना मिलते ही कोरबा पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी सहित पुलिस के आलाधिकारी मौके पर पहुंचे. साथ ही नगर सेवा के गोताखोरों के साथ पुलिस की भी टीम रेस्क्यू में जुटी है. बड़ी संख्या में ग्रामीण नहर के पास मौजूद हैं.

आंध्र प्रदेश-अनाकल्ली की पटाखा फैक्ट्री में भीषण विस्फोट, 8 लोगों की दर्दनाक मौत

नई दिल्ली.(आरएनएस)। आंध्र प्रदेश के अनकापल्ली जिले में एक पटाखा निर्माण इकाई में भयानक आग लगने से जोरदार धमाका हो गया. जानकारी के अनुसार इस हादसे में आठ लोगों की दर्दनाक मौत हो गई. वहीं, आठ से अधिक लोग जख्मी बताए जा रहे है. मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने इस हादसे पर गहरा शोक व्यक्त किया है. धमाके की आवाज इतनी तेज थी कि कई किलोमीटर दूर तक लोगों ने इसकी आवाज सुनाई दी. राज्य की गृह मंत्री वी. अनिता ने बताया, इस धमाके में दो महिलाओं सहित कुल आठ लोगों की मौत हुई है और कई अन्य घायल हुए हैं. उन्होंने कहा कि घायलों को इलाज के लिए अस्पतालों में भर्ती कराया जा रहा है. मुख्यमंत्री नायडू ने अनिता और जिला अधिकारियों को निर्देश दिया है कि घायलों को बेहतर से बेहतर चिकित्सा सुविधा मुहैया कराई जाए.

10वीं व 12वीं परीक्षा के रिजल्ट इस दिन होंगे जारी, माशिमं ने दी जानकारी

भोपाल। मप्र बोर्ड 10वीं व 12वीं परीक्षा का परिणाम मई के प्रथम सप्ताह में जारी कर दिया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने स्कूल शिक्षा विभाग के अधिकारियों को परीक्षा परिणाम मई के पहले सप्ताह में जारी करने के निर्देश दिए हैं। इसे लेकर माध्यमिक शिक्षा मंडल (माशिमं) परिणाम तैयार करने में जोर-शोर से लगा हुआ है। अभी बोर्ड परीक्षा की 80 प्रतिशत उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन पूरा हो चुका है।

मुर्शिदाबाद हिंसा पर बोले गिरिराज सिंह

हिंदुओं को पश्चिम बंगाल से भागने पर होना पड़ रहा मजबूर...

नई दिल्ली-(आरएनएस)। मुर्शिदाबाद हिंसा को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने शनिवार को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर हमला किया और कहा कि हिंदुओं को राज्य से भागने के लिए मजबूर किया जा रहा है। सिंह ने बेगूसराय में संवाददाताओं से कहा कि मुसलमानों के साथ-साथ हिंदुओं की सुरक्षा भी ममता बनर्जी की जिम्मेदारी है। मुर्शिदाबाद हिंसा से पता चलता है कि हिंदुओं को पश्चिम बंगाल से भागने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि यह सब राज्य सरकार के सामने हो रहा है। यह तब हुआ जब मुर्शिदाबाद में वक्फ अधिनियम का विरोध करने वाले प्रदर्शन हिंसक हो गए और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाया गया। वक्फ (संशोधन) विधेयक को क्रमशः 2 और 3 अप्रैल को लोकसभा और राज्यसभा में पेश किया गया था। इससे पहले दिन में, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने वक्फ (संशोधन) अधिनियम को लेकर मुर्शिदाबाद में हुई हिंसा के लिए पश्चिम बंगाल सरकार पर कटाक्ष किया और कहा कि यह चिंताजनक है कि राज्य में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कैसे दबाया जा रहा है

मध्यप्रदेश, प्राथमिक साख सहकारी समितियों के कम्प्यूटराइजेशन में देश में प्रथम- केंद्रीय मंत्री शाह

अब सहकारी समितियां चलाएगी पेट्रोल पम्प, बाटेगी गैस-अमित शाह

केन्द्र सरकार के मार्गदर्शन में सहकारी आंदोलन में आया क्रांतिकारी परिवर्तन- मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (आरएनएस)। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा है कि राज्यों में प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियां (पैक्स) के कंप्यूटराइजेशन का कार्य चल रहा है। इसमें मध्यप्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है। केंद्रीय मंत्री ने मध्यप्रदेश में शत-प्रतिशत उपलब्धि की सराहना की। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में साढ़े 5 करोड़ लीटर दूध का उत्पादन होता है जो देश के कुल उत्पादन का 9 प्रतिशत है। प्रदेश में सुशासन का दौर चल रहा है, यह सहकारिता को जीवंत करने का स्वर्णिम अवसर है। प्रदेश के किसानों के साथ केन्द्र सरकार चट्टान की तरह खड़ी है। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के साथ मिलकर कम से कम 50 प्रतिशत गांवों तक सहकारिता और डेयरी गतिविधियों का विस्तार करना आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक नीति निर्माण और प्लानिंग भी करना होगी। केन्द्र सरकार की ओर से वित्तीय सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। किसानों को दुग्ध उत्पादन का शत-प्रतिशत लाभ सुनिश्चित करने के लिए व्यापक स्तर पर गतिविधियां संचालित करनी होंगी। प्रदेश में दुग्ध उत्पादन और उसकी प्रोसेसिंग से विभिन्न उत्पाद निर्मित कर किसानों की आय बढ़ाने की ओर एनडीडीवी और राज्य सरकार एक साथ अग्रसर होंगे। यह रास्ता अभी टू-लेन है, जिसे 6 लेन में विस्तारित करना होगा।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री शाह रविवार को भोपाल के रविन्द्र भवन में राज्य स्तरीय सहकारी सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। केंद्रीय मंत्री श्री शाह और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और मध्यप्रदेश डेयरी फेडरेशन के मध्य अनुबंधों का आदान प्रदान हुआ।

केंद्रीय मंत्री श्री शाह ने कहा है कि देश में कृषि, पशुपालन और सहकारिता के क्षेत्र में कार्य करने की अपार संभावनाएं हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले साढ़े तीन साल में सहकारिता क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। पैक्स के सशक्तिकरण, डेयरी क्षेत्र को प्रोत्साहन, उत्पादन के क्षेत्र में सहकारिता, गतिविधियों के विस्तार, नगरीय सहकारी बैंक, जिला सहकारी बैंक और ग्रामीण बैंकों के सुचारू संचालन की व्यवस्था की ओर विशेष ध्यान दिया गया। केंद्रीय सहकारिता मंत्रालय ने गठन के बाद सबसे पहले प्राथमिक कृषि सहकारी साख समितियों के लिए मॉडल बायलॉज विकसित कर उन्हें राज्यों के साथ साझा किया। यह प्रसन्नता का विषय है कि संपूर्ण भारत में यह बायलॉज को लागू किया जा चुका है। केंद्रीय मंत्री श्री शाह ने मॉडल बायलॉज को अपनाने के लिए सभी राज्यों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस कदम से सहकारिता आंदोलन को नया जीवन प्राप्त हुआ है। सहकारी समितियां अब पेट्रोल पम्प व गैस एजेंसी संचालन, रेल्वे टिकट बुकिंग, बिल जमा करने जैसी गतिविधियां भी संचालित कर रही हैं। एक समय था जब पैक्स केवल कम अवधि के लिए कृषि ऋण उपलब्ध कराते थे जिसमें उन्हें केवल आधा प्रतिशत लाभ होता था। वर्तमान में पैक्स 30 से अधिक गतिविधियों में संलग्न है इससे उनकी आय भी बढ़ रही है। केंद्रीय मंत्री श्री शाह ने कहा है कि देश के विभिन्न राज्यों में सहकारिता आंदोलन धीरे-धीरे मृत प्राय: होता जा रहा था। पूरे देश में सहकारिता आंदोलन का परिदृश्य भिन्न-भिन्न था।

तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि ने छात्रों से जय श्री राम के नारे लगवाए, विवाद खड़ा हुआ

तमिलनाडु- (आरएनएस)। तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि ने एक नया विवाद खड़ा कर दिया है। दरअसल, मदुरै के एक इंजीनियरिंग कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रवि ने छात्रों से जय श्री राम का नारा लगाने को कहा। उन्होंने छात्रों से यह अपील कम्ब रामायणम लिखने वाले एक प्राचीन कवि को सम्मान देने के लिए की थी। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिसके बाद विवाद खड़ा हो गया।

वीडियो में छात्रों को रवि के साथ जय श्री राम के नारे लगाते हुए सुना जा सकता है। छात्रों से नारे लगवाने से पहले रवि ने कहा, इस दिन, हम श्री राम के महान भक्त को श्रद्धांजलि देते हैं। मैं कहूंगा और आप कहेंगे जय श्री राम। राज्यपाल रवि की टिप्पणी सत्तारूढ़ डीएमके को पसंद नहीं आई और उन्होंने उनकी आलोचना की और उन्हें आरएसएस का प्रवक्ता भी कहा। डीएमके प्रवक्ता धरणीधरन ने कहा, यह देश के धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के खिलाफ है। राज्यपाल बार-बार संविधान का उल्लंघन क्यों करना चाहते हैं। उन्होंने अभी तक इस्तीफा क्यों नहीं दिया है? वह आरएसएस के प्रवक्ता हैं। हम जानते हैं कि उन्होंने देश के संघीय सिद्धांतों का उल्लंघन कैसे किया और सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें उनकी जगह कैसे दिखाई। कांग्रेस विधायक आसन मौलाना ने राज्यपाल रवि की जय श्री राम की बात की आलोचना की और कहा कि वे एक धार्मिक नेता की तरह बोल रहे हैं जो एक धार्मिक विचारधारा को बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने कहा, वे इस देश के सर्वोच्च पदों में से एक हैं। वे एक धार्मिक नेता की तरह बोल रहे हैं, जो इस देश के लिए परेशानी का सबब बन रहा है। भारत में विविध धर्म, विविध भाषाएँ और विविध समुदाय हैं। राज्यपाल छात्रों से जय श्री राम का नारा लगाने के लिए कहते रहते हैं। यह असमानता को बढ़ावा दे रहा है। यह किसी धार्मिक विचारधारा को बढ़ावा दे रहा है, जो राज्यपाल को नहीं करना चाहिए था। वे आरएसएस और भाजपा के प्रचार मास्टर बन गए हैं।

रूस ने कीव स्थित भारतीय दवा गोदाम पर किया मिसाइल से हमला

नई दिल्ली. रूसी मिसाइल हमले में यूक्रेन में स्थित एक भारतीय फार्मास्यूटिकल कंपनी कुसुम के गोदाम में आग लग गई. इस हमले के बाद भारत में स्थित यूक्रेनी दूतावास ने आरोप लगाया कि रूस ने जानबूझकर राजधानी कीव में भारतीय गोदाम को निशाना बनाया है. इस मामले को लेकर यूक्रेनी दूतावास ने कहा आज रूस ने यूक्रेन में भारतीय कंपनी कुसुम के गोदाम पर मिसाइल से हमला किया. भारत के साथ खास दोस्ती का दावा करने वाला रूस जानबूझकर भारतीय कंपनियों पर हमला कर रहा है. गोदाम में बुजुर्गों-बच्चों की जरूरी दवाइयां थीं

जनसंपर्क संचालक अंशुल गुप्ता को भेजा विदिशा, प्रदेश में 9 कलेक्टर के हुए तबादले

भोपाल (आरएनएस)। मध्य प्रदेश सरकार ने रविवार शाम को बड़ा प्रशासनिक फेरबदल करते हुए 9 आईएएस अधिकारियों के तबादले के आदेश जारी किए। इसमें दो कलेक्टरों को हटाने के साथ-साथ दो अन्य कलेक्टरों का तबादला किया गया है।

उज्जैन और अशोक नगर के कलेक्टरों को हटाकर नई जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं, जबकि विदिशा और हरदा में नए कलेक्टर नियुक्त किए गए हैं। इसके अलावा सिंहस्थ 2028 की तैयारियों को ध्यान में रखते हुए इंदौर कलेक्टर को अतिरिक्त प्रभार दिया है। दो राज्य प्रशासनिक सेवा अधिकारियों के तबादले भी किए हैं।

उज्जैन के कलेक्टर नीरज कुमार सिंह को हटाकर संचालक, परियोजना लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण बनाया गया है। हाल ही में उनके शासकीय आवास पर पुलिस के पहुंचने के बाद पारिवारिक विवाद का मामला सामने आया था, जिसके बाद से उनकी विदाई की अटकलें तेज थीं।

अशोक नगर के कलेक्टर सुभाष कुमार द्विवेदी को ईसागढ़ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम के बाद हटाया गया। उन्हें सामान्य प्रशासन विभाग का अपर सचिव नियुक्त किया गया है।

विदिशा और हरदा में नए कलेक्टर

विदिशा के कलेक्टर रौशन कुमार सिंह को अब उज्जैन का कलेक्टर बनाया गया है। मुख्यमंत्री के करीबी माने जाने वाले रौशन पूर्व में संचालक जनसंपर्क रह चुके हैं। जनसंपर्क संचालक अंशुल गुप्ता को विदिशा का नया कलेक्टर नियुक्त किया गया है। हरदा के कलेक्टर आदित्य सिंह को हटाकर अशोक नगर का कलेक्टर बनाया गया है। उनकी जगह भोपाल के अपर कलेक्टर सिद्धार्थ जैन को हरदा का कलेक्टर नियुक्त किया गया है। हरदा में पटाखा फैक्ट्री हादसे के बाद आदित्य सिंह के तबादले की चर्चा थी।

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। थाना अधारताल में श्रीमती उषा चक्रवर्ती उम्र 33 वर्ष निवासी हाउसिंग बोर्ड जैन मंदिर के पास अधारताल ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह मजदूरी करती है उसकी शादी लगभग 14 वर्ष पहले हुयी है उसके 2 बच्चे हैं पति नोनेलाल चक्रवर्ती भी मजदूरी करते हैं उसका मायका पनागर तथा ससुराल रांझी में है वह उपरोक्त पते पर लगभग 3 वर्ष से किराये से रह रही है रात लगभग 8-30 बजे पति बाहर से आये और घरेलू बातों को लेकर गाली गलोज करने लगे, उसने गालियां देने से मना किया तो हाथ मुक्कों एवं डंडे से मारपीट कर हाथ पैर एवं जांघ में चोट पहुँचा दी

चार कृतियों का हुआ विमोचन- समाज की चेतना है महिला रचनाकार

हिंदी लेखिका संघ का वार्षिकोत्सव भव्यता से संपन्न

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। हिंदी लेखिका संघ की नगर इकाई के रचनाकारों ने विगत वर्षों में प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय क्षितिज पर अपनी पहचान बनायी है। इनके लेखन का कैनवास व्यापक है जिसमें संवेदनशीलता, मूल्यों की छटपटाहट एवं सम सामयिक मुद्दों के अनेक रंग बिखरे हैं।इनका लेखन सामाजिक संचेतना का प्रतीक है। उक्त आशय के विचार अतिथियों ने व्यक्त किये।अवसर था कला वीथिका में आयोजित हिंदी लेखिका संघ के वार्षिकोत्सव का। आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ. हरिशंकर दुबे, अध्यक्ष आचार्य भगवत दुबे, एवं विशिष्ट अतिथि श्री राजेश पाठक प्रवीण थे। संस्था अध्यक्ष डॉ. कामना कौस्तुभ ने स्वागत भाषण में संस्था द्वारा किये गये उल्लेखनीय कार्यों के बारे में बताया, वहीं कार्यक्रम निदेशक श्रीमती अर्चना मलैया ने संस्था की आगामी योजनाओं पर प्रकाश डाला।इस अवसर पर नगर की प्रतिष्ठित रचनाकारों डॉ अनामिका तिवारी की कृति पट्ट महिषी महारानी मंदोदरी ?, श्रीमती इस्मिता माथुर की %वामा का इंद्र धनुष ? एवं %हल्की-फुल्की कहानियां ?, भोपाल से पधारी कवयित्री ई अर्चना नायडू की कृति %आपकी अरु% एवं श्रीमती प्रतिमा अखिलेश की कृति % %सुनो प्रियंवद का% विमोचन अतिथियों के कर कमलों से हुआ। कृतियों की समीक्षा क्रमशः डॉ. इला घोष, डॉ. उषा दुबे डॉ. अनामिका तिवारी द्वारा की गयी। सभी कृतिकारों को %वागेश्वरी अलंकरण% से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती ज्योत्स्ना शर्मा के स्वस्ति वाचन, अनुकंपा नायक की शंख ध्वनि एवं कृष्णा राजपूत के मंगलाचरण से हुआ। नारी शक्ति पर केंद्रित सुश्री नौमी के एकल नृत्य ने सभी को भाव विभोर कर दिया। संस्था की संरक्षिकाओं डॉ अंबर प्रियदर्शी, डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे, डॉ. मुकुल तिवारी, डॉ. शोभा सिंह, डॉ. छाया सिंह,डॉ गीता गीत, श्रीमती चंद्र प्रकाश वैश्य के सम्मान के साथ नगर में सक्रिय संस्थाओं सनाढ्य संगम संस्था,गुंजन कला सदन, गूंज संस्था एवं एक पहल संस्था को सम्मानित किया गया। व्यक्तिगत रूप से समाज में विशेष अवदान के लिये श्रीमती रचना त्रिवेदी, श्रीमती रश्मि सेन, श्रीमती हंसा ठाकुर एवं श्रीमती मंजूषा राईन को %सेवा- सम्मान ? से समादरित किया।श्रीमती निर्मला तिवारी एवं श्रीमती आरती शर्मा को साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिये सम्मानित किया गया। संस्था सचिव अर्चना गोस्वामी ने राम भजन प्रस्तुत किया ।शशिकला सेन, सिद्धेश्वरी सराफ, मनीषा गौतम ,डॉ अंकिता नेमा, विनिता पैगवार, लता गुप्ता, डॉ. सलमा जमाल ,अलका पटेल,ज्योति मिश्रा शिल्पा ताम्हाणे,विजय नेमा,संतोष नेमा,यशोवर्धन पाठक,दिवाकर शर्मा,महेश स्थापक,आलोक पाठक, संजय जैन,

वैसाखी पर्व मनाने गुरुद्वारे पहुंचे वरिष्ठ कॉंग्रेस नेता

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। आज 13 अप्रैल को सिखों का सर्जना दिवस प्रेम नगर गुरुद्वारे मै बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया जिसमें देश के नामी गिरामी रागी, टाडी, कथावाचक,शामिल हुए हजारों की संख्या मैं सिख संगत एवं सभी जात बारादरी के लोगों ने शामिल होकर अपनी उपस्थिति दर्ज करायी एवं गुरु घर का आशीर्वाद प्यार प्राप्त किया, इस मौके पर शहर के कॉंग्रेस जनों ने भी गुरुद्वारे पहुंचकर सिख संगतों को सिख धर्म के सर्जना दिवस की बधाईयाँ दी एवं कीर्तन सुना और गुरु का लंगर भी छका इस अवसर पर शहर कॉंग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सौरभ शर्मा, पूर्व विधायक संजय यादव, पूर्व मंत्री तरुण भनोट, लोकसभा प्रत्याशी दिनेश यादव, पूर्व पार्षद नरिंदर सिंह पांधे, झलेलाल जैन, श्याम सोलंकी,परमिंदर सिंह, अमरजीत सिंह मिट्ठू, जगजीत सिंह सरन आदि कॉंग्रेस ज़न विशेष रूप से उपस्थित रहे.

मारपीट करने वाले आरोपियों की तलाश

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। थाना कुण्डम में रात्रि विकास पटैल उम्र 23 वर्ष निवासी गाम पौड़ी पोड़ा थाना सिहोरा ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह ग्राम बघराजी बस स्टेण्ड शराब दुकान में काम करता है दिनांक 12-4-25 की सुबह लगभग 9 बजे अपने साथी सचिन असाटी , हरीश परमार के साथ शराब दुकान का नया ठेका होने पर हम ग्राम जमुनिया नारायणपुर, लहसर एवं पटना कला होते हुये जैसे ही लगभग 11-30 बजे पिपरिया खेर माई के पास चाय टपरा के पास पहुँचे जहां टपरा में प्रमोद पटैल, बृंदा पटेल, आशीष पटेल मिले एवं रोड़ में आकर रोके तथा बोले कि कि तुमने मेरे भाई की शराब पकड़वायी है कहते हुये तीनों गाली गलौज करते हुये हाथ मुक्कों एवं डंडे से मारपीट करने लगे उसके वायें पैर, हाथ सिर सीना पेट में चोट आ गयी है। मारपीट कर तीनों जान से मारने की धमकी दिये। रिपोर्ट पर धारा 126(2), 296, 115, 351(2), 3(5) बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया

मुविप के प्रदेशाध्यक्ष के नगरागमन पर किया गया भव्य स्वागत

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। मप्र मुस्लिम विकास परिषद आगामी 18 अप्रैल को सर्वधर्म सद्भाव व ईद मिलान समारोह का भव्य आयोजन भारत पावर लूम प्रांगण, रद्दी चौकी में आयोजित किया जा है। कार्यक्रम की तैयारियो का जायजा लेने व रूप रेखा तय करने हेतु मुस्लिम विकास परिषद के प्रदेशाध्यक्ष एड. मो. माहिर खान का शहर नगरागमन हुआ।

परिषद के जिला कार्यालय में उनकी आगवानी कर जिलाध्यक्ष डॉ. मुईन अंसारी, पठान समाज के सरदार हाजी मुईन खान, फैजान कुरैशी, इरफान कुरैशी, गुलाम साबरी, जावेद मिर्जा, अहमद रज़ा, आरिफ खान, इस्तीयाक अंसारी, इकबाल चांद खां, अशफाक अंसारी, साजिद काज़ी, मुजफ्फर कुरैशी, शेख निज़ामी, मामूर गुड्डू, अब्दुल बाकी खान, ताहिर खोकर, हाशिम राजा, मेहताब अली, सलीम खान, शाहिद कुरैशी, रिफत कुरैशी, तारिक कुरैशी, अशरफ कुरैशी, लियाकत जावेद, इरफान अंसारी, एड. रियाज राइन, एड. अकबर उस्मानी, एड. निसार अंसारी, एड. अय्यूब अंसारी आदि ने पुष्प मालाओं से भव्य स्वागत किया।

पनागर सामुदायिक सहभागिता से होगा जल संरक्षण जल गंगा संवर्धन अभियान

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। मध्यप्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री,एवं अध्यक्ष मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद श्री मोहन यादव जी के आव्हान पर मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद विकासखंड पनागर,मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम की साप्ताहिक कक्षाओ के छात्र,छात्राओं की उपस्थिति में आज ग्राम फूटाताल में जन जागरूकता रैली ग्राम

रैली,मानव श्रृंखला,बनाके तालाब स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन

भ्रमण का आयोजन किया गया जिसमे सभी को जल ही जीवन,जल है तो कल है का संदेश सभी को रैली के माध्यम से दिया गया है साथ ही स्थानिये फूटाताल तालाब की साफ सफाई,स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन मानव श्रृंखला बना के सभी छात्र,छात्राओं के द्वारा श्रमदान से किया गया है साथ ही उपस्थित सभी छात्रों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई इस अवसर पर विकासखंड समन्वयक पनागर के द्वारा बताया गया कि 30 मार्च से 30 जून तक चलने बाले जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत विकासखंड पनागर के सभी ग्रामो में सामुदायिक सहभागिता से नवांकुर संस्थाओ,मेंटर्स, प्रस्फुटन समितियों, छात्र,छात्राओं के साथ अभियान निरंतर चलाया जा रहा है कार्यक्रम में भारत महरोलिया विकासखंड समन्वयक पनागर,नवांकुर संस्था पारस दाहिया,अजय पटेल,मेंटर्स पार्वती लोधी,सुभम पटेल,सुशील सेन,मनोज प्रजापति,सुभम,राजेश सोनी के साथ छात्र,छात्राओ अन्य ग्राम के गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में कार्यक्रम संपन्न किया गया है

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला द्वारा 13 अप्रैल को डॉ. अम्बेडकर नगर - कोटा - नई दिल्ली एक्सप्रेस का डॉ. अम्बेडकर नगर एवं कोटा रेलवे स्टेशनों से हरी झण्डी दिखाकर शुभारंभ किया जाएगा

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश डॉ. मोहन यादव, माननीय केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़ेंगे तथा माननीया महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर, माननीय सांसद इंदौर शंकर लालवानी एवं माननीया सांसद राज्यसभा कविता पाटीदार डॉ. अम्बेडकर नगर में उपस्थित रहेंगे। अध्यक्ष लोकसभा ओम बिरला जी रविवार 13 अप्रैल 2025 को डॉ. अम्बेडकर नगर एवं कोटा रेलवे स्टेशनों पर डॉ. अम्बेडकर नगर - कोटा - नई दिल्ली एक्सप्रेस ट्रेन का हरी झण्डी दिखाकर शुभारंभ करेंगे।

राजस्थान और मध्य प्रदेश के पर्यटन/दर्शनीय स्थलों को बढ़ावा देने एवं यात्री सुविधाओं तथा सुगम आवागमन के उद्देश्य से रेलवे द्वारा नियमित रेल सेवा के रूप में ट्रेन नंबर 20155/20156 डॉ. अम्बेडकर नगर - नई दिल्ली - डॉ. अम्बेडकर नगर एक्सप्रेस ट्रेन को चलाने का निर्णय लिया है। इस ट्रेन का नियमित संचालन भारतीय संविधान निर्माता बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की जयंती के अवसर पर उनकी जन्मस्थली 'महू' शहर के डॉ. अम्बेडकर नगर रेलवे स्टेशन से नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के मध्य किया जायेगा। इसी तारतम्य में कोटा से ट्रेन नं. 02055 कोटा-नई दिल्ली स्पेशल ट्रेन सेवा तथा डॉ. अम्बेडकर नगर से 09355 डॉ. अम्बेडकर नगर - कोटा स्पेशल ट्रेन का शुभारम्भ किया जा रहा है।

डॉ. अम्बेडकर नगर - कोटा - नई दिल्ली एक्सप्रेस ट्रेन को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश डॉ. मोहन यादव, माननीय केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव तथा माननीया महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर, माननीय सांसद इंदौर शंकर लालवानी एवं माननीया सांसद राज्यसभा कविता पाटीदार द्वारा डॉ. अम्बेडकर नगर से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जाएगा।

यह ट्रेन राजस्थान क्षेत्र में लंबे समय से लंबित सार्वजनिक मांग को पूरा करती हैं। यह ट्रेन राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं राजधानी नई दिल्ली प्रदेश क्षेत्र के रोजगार, व्यापार, वाणिज्य और अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में योगदान देगी। नई दिल्ली-डॉ अम्बेडकर नगर (महू) के बीच नई ट्रेन के संचालन से राज्यों के जिलों में पड़ने वाले मध्यवर्ती स्टेशनों के यात्रियों को आवागमन का लाभ मिलेगा।

नई ट्रेन का लाभ–

? इस नई रेल सेवा के आरंभ होने से राजस्थान की शिक्षा नगरी कोटा को देश की राजधानी नई दिल्ली एवं मध्यप्रदेश में स्थित महाकाल की नगरी उज्जैन, मध्यप्रदेश की औद्योगिक नगरी इन्दौर एवं डॉ. अम्बेडकर नगर (महू) से सीधी कनेक्टिविटी मिलेगी।

? राजस्थान एवं मध्य प्रदेश राज्यों के अंतर्गत आने वाले पर्यटन एवं तीर्थ स्थलों जैसे मथुरा, उज्जैन, भरतपुर, सवाई माधोपुर, कोटा, देवास एवं इंदौर के विकास को बढ़ावा मिलेगा, जिससे दोनों राज्यों का आर्थिक एवं सामाजिक विकास होगा। ? इस नई रेल सेवा की सौगात से विधार्थियों, व्यापारियों, किसानों एवं आमजन को सीधा लाभ पहुँचेगा। ? राजस्थान एवं मध्य प्रदेश राज्यों के यात्रियों को देश की राजधानी नई दिल्ली के लिए सुरक्षित एवं सुगम यात्रा के लिए सीधी ट्रेन की उपलब्धता होगी। उद्घाटन सेवा स्पेशल गाड़ी संख्या 02055 कोटा-नई दिल्ली एक्सप्रेस (स्पेशल ट्रेन सेवा)– नई ट्रेन के शुभारम्भ में उद्घाटन सेवा गाड़ी संख्या 02055 स्पेशल कोटा से रविवार, 13 अप्रैल को रात 22.30 बजे प्रस्थान कर सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, बयाना, भरतपुर, मथुरा एवं हजरत निजामुद्दीन होकर नई दिल्ली सुबह 05.20 बजे पहुँचेगी। उद्घाटन सेवा गाड़ी संख्या 09355 डॉ. अम्बेडकर नगर - कोटा एक्सप्रेस (स्पेशल ट्रेन सेवा)– नई ट्रेन के शुभारम्भ में उद्घाटन सेवा गाड़ी संख्या 09355 स्पेशल डॉ. अम्बेडकर नगर से रविवार, 13 अप्रैल को रात 22.30 बजे प्रस्थान कर इन्दौर, देवास, उज्जैन, नागदा, शामगढ़, भवानीमंडी एवं रामगंजमंडी होकर कोटा सुबह 04.25 बजे पहुँचेगी।

नियमित रूप से चलने वाली कोटा होकर गाड़ी संख्या 20156/20155 नई दिल्ली-डॉ अम्बेडकर नगर (महू) - नई दिल्ली के बीच नई ट्रेन–

? यह नई ट्रेन नई दिल्ली-डॉ अम्बेडकर नगर (महू)-नई दिल्ली के मध्य नियमित रूप से दिनांक 14 अप्रैल को नई दिल्ली से एवं 15 अप्रैल को डॉ अम्बेडकर नगर (महू) से चलेगी। इस गाड़ी में 1 प्रथम श्रेणी एसी, 2 द्वितीय श्रेणी एसी, 6 थर्ड एसी, 2 थर्ड एसी इकोनॉमी, 5 स्लीपर, 4 सामान्य श्रेणी, 1 एसएलआरडी एवं 1 जनरेटरकार सहित कुल 22 कोच होंगे।

नियमित नई गाड़ी संख्या 20156/20155 नई दिल्ली-डॉ अम्बेडकर नगर-नई दिल्ली (प्रतिदिन नियमित ट्रेन सेवा)– गाड़ी संख्या 20156 नई दिल्ली-डॉ अम्बेडकर नगर ट्रेन नई दिल्ली से रात 23.25 बजे प्रस्थान कर मंडल के भरतपुर स्टेशन पर रात 01.38 बजे, बयाना 02.05 बजे, गंगापुर सिटी 02.58 बजे, सवाई माधोपुर 03.43 बजे, कोटा सुबह 05.20 बजे, रामगंजमंडी 06.13 बजे, भवानीमंडी 06.33 बजे एवं शामगढ़ 06.58 बजे 09–05 बजे नागदा, 10–30 उज्जैन, 11–18 देवास दोपहर 12.00 बजे इंदौर और 12.50 बजे गंतव्य स्टेशन डॉ अम्बेडकर नगर पहुँचेगी। इसी प्रकार वापसी में गाड़ी संख्या 20155 डॉ अम्बेडकर नगर-नई दिल्ली ट्रेन डॉ अम्बेडकर नगर से दोपहर 15.30 बजे प्रस्थान कर इंदौर 15.50 बजे, देवास 16–26 बजे, उज्जैन 17–15 बजे, नागदा 18–25 बजे पहुंचकर, शामगढ़ 19.38 बजे, भवानीमंडी 20.00 बजे, रामगंजमंडी 20.23 बजे, कोटा 21.25 बजे, सवाई माधोपुर 22.43 बजे, गंगापुर सिटी 23.28 बजे, बयाना मध्य रात्रि 00.23 बजे एवं भरतपुर 00.58 बजे और प्रातः 04.25 बजे गंतव्य स्टेशन नई दिल्ली पहुँचेगी।

? गाड़ी के ठहराव– यह नई गाड़ी दोनों दिशाओं में नई दिल्ली-डॉ अम्बेडकर नगर के बीच हजरत निजामुद्दीन, मथुरा, भरतपुर, बयाना, गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर, कोटा, रामगंजमंडी, भवानीमंडी, शामगढ़, नागदा, उज्जैन, देवास एवं इंदौर स्टेशनों पर रुकेगी।

गालियां देने से मना किया तो डंडे से हमला

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। थाना तिलवारा में रात अजय चक्रवर्ती उम्र 30 वर्ष निवासी कुम्हार मोहल्ला तिलवारा ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह मुर्गा चिकन की दुकान चलाता है दिनांक 12-4-25 को रात लगभग 10-30 बजे अपने घर के बाहर टहल रहा था तभी त्रिपुरी चौक गढ़ा में उसकी बुआ का लड़का करन चक्रवर्ती शराब पीकर आया और उससे किसी बात पर से हसी मजाक करने लगा, उसने मजाक करने से मना किया तो करन उसके साथ गाली गलौज करने लगा, गालियां देने से मना किया तो डंडे से हमलाकर हाथ में चोट पहुँचा दी तथा उसे धक्का देकर जान से मारने की धमकी देते हुये भाग गया। रिपोर्ट पर धारा 296, 115, 351(3) बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। थाना पाटन में दिनांक 12-4-25 की रात्रि नेबा चौधरी उम्र 45 वर्ष निवासी चौधरी मोहल्ला पाटन ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह झाड़ू बनाकर बेचता है दिनांक 12-4-25 को रात लगभग 8 बजे अपने घर पर था बड़ा लड़का राकेश एवं मंझला लड़का मनीष दोनों उससे प्लाट में हिस्सा हक मांगने लगे एवं प्लाट अपने नाम कराने को कहने लगे, उसने मना किया तो दोनों उसके साथ गाली गलोज करने लगे, उसने गालियां देने से मना किया तो दोनों हाथ मुक्कों से मारपीट करने लगे एवं उसे उठाकर पटक दिया

पशु पालन एम्प्लॉई लीग क्रिकेट / महिला बैडमिंटन टूर्नामेंट (पीपीईएल 2025)

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। पशुपालन एवं डेयरी विभाग तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी विभागीय कर्मचारी कल्याण समिति के संभागीय उपाध्यक्ष सुहेल अनवर खान ने एक विज्ञप्ति जारी कर अवगत कराया कि - पशुपालन एवं डेयरी विभाग तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी विभागीय कर्मचारी कल्याण समिति मध्य प्रदेश के तत्वाधान में आयोजित होने वाली प्रदेश स्तरीय विभागीय कर्मचारी क्रिकेट /महिला बैडमिंटन (पीपीईएल 2025) प्रतियोगिता जबलपुर संभाग में दिनांक 18, 19 एवं 20 अप्रैल 2025 को आयोजित की जा रहीं है।

इस प्रतियोगिता में प्रदेश स्तर से पशु पालन एवं डेयरी विभाग की 16 टीमें भाग ले रही है, जिसमे जबलपुर, भोपाल, नरसिंगपुर, बालाघाट, मंडला, रतलाम, बड़वानी, छिंदवाड़ा, ग्वालियर, सिंगरौली, देवास, सागर, रीवा आदि जिलों के पशु पालन एवं डेयरी विभाग के कर्मचारी / अधिकारी शामिल होंगे। विदित हो कि गत वर्ष यह प्रतियोगिता भोपाल में आयोजित की गई थी जिसमे ग्वालियर संभाग विजेता रहा। प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 18 19 एवं 20 अप्रैल 2025 को कृषि विश्वविद्यालय अधारताल जबलपुर बलपुर के ग्राउंड (इंडियन कॉफ़ी हाउस के पीछे किया जायेगा जिसमे पहली पाली में सुबह 6 बजे से दोपहर 12 बजे तक 4 मैच एवं द्वितीय पाली में शाम 4 बजे से 6 बजे तक 2 मैच खेले जायेगे। सेमी फाइनल एवं फाइनल मैच दिनांक 20 अप्रैल 2025 को से खले जायेगे।

साथ ही इस वर्ष प्रथम बार विभागीय महिला बैडमिंटन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जा रहा है जिसमे लगभग 10 टीम हिस्से ले रही है। है। यह प्रतियोगिता दिनांक 19 एवं 20 अप्रैल 2025 को कृषि विश्वविद्यालय अधारताल जबलपुर के ग्राउंड (इंडियन कॉफ़ी हाउस के पीछे) में आयोजित की जावेगी। इस अवसर पर दिनांक 18 एवं 19 अप्रैल 2025 को पशुपालन एवं डेयरी विभाग तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी विभागीय कर्मचारी कल्याण कर्मचारी कल्याण समिति का चिन्तन शिविर भी आयोजित किया जायेगा। जिसमे प्रदेश स्तर के कर्मचारी उपस्थित रहेंगे।

भोपाल -खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने राष्ट्रीय खाद्य, सुरक्षा अधिनियम के पात्र हितग्राहियों की ई-केवायसी 30 अप्रैल तक विशेष अभियान चलाकर करने के निर्देश दिये हैं। मंत्री श्री राजपूत ने बताया है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत 543.31 लाख पात्र हितग्राहियों में से शेष 108.27 लाख हितग्राहियों की ई-केवायसी 30 अप्रैल तक पूर्ण करने के निर्देश भारत सरकार द्वारा प्राप्त हुए हैं।

दिल्ली की शाम हुई मालवा की संस्कृति से मनोहारी- लाल किला परिसर में तीन दिवसीय सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य महामंचन का हुआ शुभारंभ-14 अप्रैल तक चलेगा महानाट्य का महामंचन, 250 कलाकार एक साथ कर रहे हैं अभिनय

शासकों के लिए आज भी आदर्श हैं सम्राट विक्रमादित्य- उप राष्ट्रपति धनखड़

भोपाल- (आरएनएस) उप राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने कहा है कि सम्राट विक्रमादित्य ने अपने शासन से उस काल को और भारत को गौरवान्वित किया। हमारी सांस्कृतिक चेतना के विकास में सम्राट विक्रमादित्य का अतुल्य योगदान रहा। वे शासकों के लिए आज भी एक आदर्श हैं। वे बड़े प्रजा वत्सल थे। उन्होंने शासकों को सिखाया कि एक राजा को किस तरह अपनी प्रजा की सेवा करनी चाहिए। उन्होंने अपने शासनकाल में कला संस्कृति, साहित्य और विज्ञान के संरक्षण और संवर्धन से भारत राष्ट्र को समृद्ध किया। उप राष्ट्रपति श्री धनखड़ शनिवार शाम को दिल्ली के लाल किला परिसर स्थित माधादास पार्क में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा आयोजित सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य महामंचन के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उप राष्ट्रपति श्री धनखड़ एवं अन्य अतिथियों ने इस तीन दिवसीय सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य महामंचन आयोजन का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया। सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य महामंचन 14 अप्रैल तक लगातार जारी रहेगा। महामंचन की शुरुआत राष्ट्र गान से हुई।

उप राष्ट्रपति श्री धनखड़ ने कहा कि हमारी संस्कृति एक मिसाल है कि भारतीय जीवन मूल्यों के साथ जीवन कितना सहज और सरल हो सकता है। उन्होंने कहा कि भारतीयता हमारी पहचान है और राष्ट्रवाद हमारा परम धर्म है। सम्राट विक्रमादित्य ने अपने शासनकाल में राष्ट्र के निर्माण में अमूल्य योगदान दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में हमारा देश बदल रहा है। भारत में भूतल की गहराई से आकाश की ऊंचाइयों तक हर तरफ विकास ही विकास हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी की दूरदर्शिता से भारत की पुरानी प्रतिष्ठा पुनर्स्थापित और जीवंत हो रही है। उन्होंने कहा कि भाषा हमारी सांस्कृतिक चेतना की धुरी है। हमें अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए। हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भारत की सांस्कृतिक चेतना के प्रसार और भारतीय ज्ञान परम्पराओं पर आधारित शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है।उप राष्ट्रपति श्री धनखड़ ने मध्यप्रदेश सरकार द्वारा दिल्ली में किए जा रहे इस महा आयोजन के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को बधाई और साधुवाद देते हुए कहा कि केंद्र एवं दिल्ली सरकार के साथ मिलकर यह सिलसिला आगे भी जारी रहना चाहिए। हमें हमारी संस्कृति के संवर्धन के लिए हमेशा प्रयास करना चाहिए और उन्हें खुशी है कि मध्यप्रदेश में यह कार्य बड़ी लगन और कुशलता से किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहेजे रखना है। हमें इसे वैश्विक स्तर पर मान्यता दिलाने के लिये प्रयास करना चाहिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सम्राट वीर विक्रमादित्य के शासनकाल को भारतीय इतिहास का गौरवशाली काल बताते हुए कहा कि हमारी संस्कृति को सहेजने और संवारने में विक्रमादित्य का अमिट योगदान है। उन्होंने सिर्फ़ शासन को सुशासन की व्यवस्था में बदला। वे अदम्य साहस, धीरता, वीरता और संवेदनशीलता के प्रतीक थे। उन्होंने अपनी प्रजा को कर्जमुक्त किया। वे अनेकानेक गुणों से युक्त थे। गरीबों, लाचारों, वंचितों को उनका हक दिलाने की प्रेरणा हमें सम्राट विक्रमादित्य से ही मिलती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सम्राट विक्रमादित्य हमारे लिए सदैव स्तुत्य रहेंगे, उन्होंने हमें जनता की सेवा की सीख दी है। वे अपनी प्रजा का सुख-दुख जानने के लिए भेष बदलकर प्रजा के बीच जाते थे। उनकी यह संवेदनशीलता बताती है कि प्रजा के सुख में ही शासक का सुख है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारी संस्कृति सदैव समृद्ध रही है और आगे भी रहेगी। हमारी संस्कृति मां गंगा की अविरल धारा की तरह सदैव अक्षुण्ण रहेगी। हमें अपने अतीत पर गर्व है और यह भावना हमें भावी पीढ़ी तक भी पहुंचानी है। देश की राजधानी दिल्ली में विक्रमादित्य महानाट्य के महामंचन के मूल में हमारी यही मंशा है। उन्होंने सभी से इस आयोजन का लाभ उठाकर अपने इतिहास के गौरवशाली काल को देखने, समझने और आनंद लेने की अपील की।

केन्द्रीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार द्वारा दिल्ली में सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य का आयोजन देश के इतिहास को जीवंत करने के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक चेतना को भी सशक्त कर रहा है। उन्होंने कहा कि सम्राट विक्रमादित्य का शासनकाल भारत की सांस्कृतिक ऊंचाइयों का उत्कर्ष था। उनके शासन पर आधारित महानाट्य का मंचन विक्रमादित्य के उस स्वर्णिम युग का मंचन है। वे ज्ञान, विज्ञान कौशल के पोषक और वीरता की मिसाल थे। वे आदर्श शासक थे। उन्होंने अपने नवरत्नों के जरिए भारत की संस्कृति को उच्चतम स्तर पर ले जाने का प्रयास किया। वीर विक्रमादित्य के शासनकाल का मंचन एक नई धारा है, एक नया सोपान है, जिसका आगाज मध्यप्रदेश सरकार ने किया है। उन्होंने इस पहल के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव को बधाई और शुभकामनाएं दीं।

दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव का आभार जताया। उन्होंने कहा कि डॉ. यादव ने दिल्ली की जनता को विक्रमादित्य के चरित्र और शौर्य से साक्षात्कार करने का अवसर दिया है। मेरा और दिल्ली का परम सौभाग्य है कि आज सम्राट विक्रमादित्य को और अधिक समझने का अवसर प्राप्त हुआ। सौभाग्य की बात है कि शौर्य और पराक्रम के प्रतीक सम्राट विक्रमादित्य पर महानाट्य का महामंचन यहाँ हो रहा है। दिल्लीवासी आज इतिहास से रुबरू हो रहे हैं। वे सम्राट विक्रमादित्य के शौर्य, पराक्रम, वीरता, कुशलता और सुशासन को अपनी आंखों से देख रहे हैं इसके लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव का बहुत-बहुत धन्यवाद।

बीजेपी का दलित विरोधी चेहरा एक बार फिर बेनकाब : संविधान और सामाजिक न्याय पर हमला अस्वीकार्य : जीतू पटवारी

भोपाल (आरएनएस)। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी ने राजस्थान के अलवर में हुई शर्मनाक घटना पर बीजेपी को आड़े हाथों लिया है। यह घटना, जिसमें बीजेपी नेता और पूर्व विधायक ज्ञानदेव आहूजा ने दलित नेता टीकाराम जूली के मंदिर में पूजा-अर्चना करने के बाद मंदिर को गंगाजल से शुद्ध किया, यह बीजेपी की संकीर्ण, जातिवादी और दलित विरोधी मानसिकता का स्पष्ट प्रमाण है। पटवारी ने इस कृत्य को न सिर्फ एक व्यक्ति के सम्मान पर हमला करार दिया, बल्कि इसे पूरे दलित समाज, बाबासाहेब आंबेडकर के संविधान और सामाजिक समानता की भावना के खिलाफ षड्यंत्र बताया।

पटवारी ने कहा, रामनवमी के पावन अवसर पर अलवर की एक सोसायटी में स्थित श्रीराम मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन हुआ था। इस समारोह में राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और दलित समाज के गौरवशाली नेता टीकाराम जूली ने पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ पूजा-अर्चना की। लेकिन अगले ही दिन बीजेपी नेता ज्ञानदेव आहूजा ने इस पवित्र कार्य को 'अपवित्रता' करार देते हुए मंदिर में गंगाजल छिड़ककर उसे शुद्ध करने का दावा किया। यह बीजेपी का असली चेहरा है। यह पार्टी दलितों को मंदिर में पूजा करने का अधिकार भी नहीं देना चाहती। यह कृत्य सिर्फटीकाराम जूली का अपमान नहीं, बल्कि पूरे दलित समाज की आस्था और गरिमा पर हमला है।

उन्होंने आगे कहा, ज्ञानदेव आहूजा ने सफाई देने की कोशिश की कि लेकिन अब बीजेपी के नेताओं का कोई भी कुतर्क या कोई भी बहाना किसी को मूर्ख नहीं बना सकता। सच्चाई यह है कि यह घटना एक दलित नेता के मंदिर में प्रवेश से जुड़ी थी, और बीजेपी की जातिवादी सोच ने इसे बर्दाश्त नहीं किया। यह वही सोच है, जो मनुस्मृति को संविधान से ऊपर मानती है और दलितों को दोयम दर्जे का नागरिक समझती है। पटवारी ने मध्यप्रदेश में बीजेपी शासन के दौरान दलितों पर हुए अत्याचारों की एक लंबी फेहरिस्त पेश करते हुए कहा, बीजेपी का दलित विरोधी रवैया कोई नई बात नहीं है। मध्यप्रदेश में सीधी जिले में एक बीजेपी कार्यकर्ता प्रवेश शुक्ला ने एक आदिवासी युवक पर पेशाब करके दलित-अदिवासी समाज का अपमान किया। मंदसौर के भानपुरा में एक दलित युवक को नंगा घुमाया गया, उसका मुंह काला किया गया और चप्पल की माला पहनाई गई। शिवपुरी में दो दलित युवकों को मैला खिलाने की क्रूरता की गई। सागर में तीन सगे दलित भाई-बहनों की निर्मम हत्या हुई। इन सभी घटनाओं में बीजेपी सरकार की उदासीनता और अपराधियों को संरक्षण देने की नीति साफ दिखती है। क्या यही है बीजेपी का 'सबका साथ, सबका विकास' का नारा?

उन्होंने तंज कसते हुए कहा, बीजेपी एक तरफबाबासाहेब आंबेडकर की जयंती पर मगरमच्छ के आँसू बहाती है, उनके स्मारकों का उ?द्घाटन करती है, लेकिन दूसरी तरफ उसके नेता और कार्यकर्ता दलितों को अपमानित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। यह दोहरा चरित्र अब जनता के सामने बेनकाब हो चुका है। पटवारी ने बीजेपी पर संविधान विरोधी होने का आरोप लगाते हुए कहा, भारतीय संविधान, जिसे बाबासाहेब ने लिखा, सभी नागरिकों को समानता का अधिकार देता है। लेकिन बीजेपी बार-बार इस संवैधानिक भावना को कुचलने की कोशिश करती है। अलवर की घटना इसका ताजा उदाहरण है। बीजेपी को यह समझ लेना चाहिए कि दलित समाज अब अपने अपमान को चुपचाप सहन नहीं करेगा। यह समाज जाग चुका है और अपने अधिकारों के लिए लड़ना जानता है। उन्होंने कांग्रेस की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा, कांग्रेस पार्टी हमेशा से दलितों, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों के सम्मान और अधिकारों की रक्षा के लिए खड़ी रही है। हम इस घटना की कड़े शब्दों में निंदा करते हैं और बीजेपी की दलित विरोधी सोच को उखाड़ फेंकने के लिए सड़क से लेकर सदन तक संघर्ष करेंगे। हम इस मुद्दे को हर गाँव, हर गली तक ले जाएंगे और जनता को बीजेपी के असली चेहरे से रू-ब-रू कराएंगे।

मेहनत और ईमानदारी के साथ पढ़ाई करने पर सफलता आपके कदम चूमेगी-स्कूल शिक्षा मंत्री सिंह

भोपाल-(आरएनएस) स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने कहा है कि मेहनत और ईमानदारी के साथ समर्पित भाव से पढ़ाई करने पर सफलता आपके कदम चूमेगी। उन्होंने कहा कि वर्तमान में जो संसाधन इंटरनेट, मोबाइल उपलब्ध हैं, उनका अधिक से अधिक उपयोग रचनात्मक कामों में किया जाना चाहिये। मंत्री श्री सिंह शुक्रवार को नरसिंहपुर जिले के तेंदूखेड़ा में स्कूल शिक्षा विभाग के तेजस्वी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मंत्री श्री सिंह ने 976 आयडिया'' पुस्तक का विमोचन किया।

मंत्री श्री सिंह ने कहा कि राज्य सरकार शिक्षा की बेहतरी के लिये लगातार प्रयास कर रही है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में सरकारी स्कूल के विद्यार्थी निजी स्कूल के विद्यार्थियों से बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। कक्षा-5वीं और 8वीं के हाल ही में घोषित रिजल्ट ने यह साबित करके दिखाया है। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि प्रदेश में नई शिक्षा नीति-2020 का बेहतर तरीके से क्रियान्वयन किया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आजादी की 100वीं वर्षगाँठ पर विकसित भारत का सपना साकार होगा और इसमें युवाओं का योगदान सबसे ज्यादा रहेगा। कार्यक्रम को विधायक श्री विश्वनाथ सिंह पटेल ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में बताया गया कि उद्यम विकास के आयडिया के लिये सीड मनी स्कीम'' में प्रदेश की 3764 टीमों ने भाग लिया। इन टीमों में 19 हजार 900 विद्यार्थी शामिल थे। मंत्री श्री सिंह ने सीड मनी के लिये जिले के 5 हजार 176 विद्यार्थियों को 2000 रुपये के मान से एक करोड़ 3 लाख रुपये का चैक प्रदान किया।

स्कूल शिक्षा विभाग का स्पोर्टर्स मैनेजमेंट सिस्टम

भोपाल (आरएनएस)। स्कूल शिक्षा विभाग ने एजुकेशन पोर्टल की तर्ज पर समूचे प्रदेश में स्कूल शिक्षा विभाग की विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं को डिजिटल प्लेटफार्म पर शिफ्ट करते हुए पेपरलेस बनाया है। विभाग का यह एक अभिनव प्रयोग है, जो खेलों की पारदर्शी प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिये महत्वपूर्ण कदम है।

मध्यप्रदेश में शिक्षा विभाग के अंतर्गत संचालित मान्यता प्राप्त एमपी बोर्ड के समस्त विद्यालय, सीबीएसई के ऐसे विद्यालय, जो स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफइंडिया के एवं स्कूल शिक्षा विभाग के तत्वावधान में आयोजित विभिन्न खेलों की प्रतियोगिताओं में शामिल होना चाहते हैं, वे इस पोर्टल पर निश्चित पंजीयन शुल्क के साथ आवश्यक अभिलेख अपलोड करते हुए पंजीयन करा सकते हैं। पंजीयन 14 से 19 वर्ष से कम आयु वर्ग की प्रतियोगिता के लिये एक ही बार कराना होगा।

सिस्टम में प्रति वर्ष आवश्यकतानुसार अपग्रेड किये जाने की सुविधा प्रदाय की गई है। विद्यालय में अध्ययन कर रहे नियमित खिलाड़ियों की दर्ज संख्या के मान से निर्धारित खेल शुल्क का संकलन इसी पोर्टल के माध्यम से किया जा सकेगा, जो स्वत: ही संचालनालय, संयुक्त संचालक संभाग और जिला शिक्षा अधिकारी के खाते में शासन द्वारा निर्धारित प्रतिशत अनुसार अंतरित हो जायेगा।

डिजिटल मीडिया के दौर में पारदर्शी और सही समय पर दी गई जानकारी बहुत जरूरी - ज्ञानेश कुमार, सीईओ भारत निर्वाचन आयोग

भोपाल(आरएनएस) भारत निर्वाचन आयोग द्वारा राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम अंतर्गत आईआईआईडीईएम में मीडिया नोडल अधिकारियों, सोशल मीडिया नोडल अधिकारियों और जिला जनसंपर्क अधिकारियों के लिए एक दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य बदलते मीडिया के बदलते दौर में चुनाव से जुड़े अधिकारियों को बेहतर तरीके से तैयार करना और उनके बीच बेहतर समन्वय बनाना था। मुख्य चुनाव आयुक्त, भारत निर्वाचन आयोग श्री ज्ञानेश कुमार ने कहा कि आज के डिजिटल मीडिया के दौर में पारदर्शी, सही और समय पर दी गई जानकारी बहुत जरूरी है, ताकि लोगों का चुनाव प्रक्रिया पर विश्वास बना रहे। उन्होंने कहा कि मीडिया नोडल अधिकारियों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जनता तक सही जानकारी पहुंचे और वे किसी भी तरह की अफवाहों या भ्रामक खबरों से प्रभावित न हों। कार्यक्रम में देश के 28 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों के अधिकारी शामिल हुए। इस ओरिएंटेशन के दौरान अधिकारियों को जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 और 1951, निर्वाचन पंजीकरण नियम 1960, निर्वाचन संचालन नियम 1961 और चुनाव आयोग के दिशा-निर्देशों की जानकारी दी गई। यह भी बताया गया कि मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म्स के जरिए सही जानकारी कैसे फैलानी है, गलत सूचनाओं से कैसे निपटना है और मतदाताओं को कैसे जागरूक करना है। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा नई दिल्ली स्थित इंडिया इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डेमोक्रेसी एंड इलेक्शन मैनेजमेंट (आईआईआईडीईएम) में विगत दिनों हुए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय मध्यप्रदेश के मीडिया नोडल अधिकारी श्री राजेश दाहिमा, सोशल मीडिया नोडल अधिकारी श्री सुनील वर्मा और और जिला जनसंपर्क अधिकारी श्री अरूण शर्मा शामिल हुए।

मध्यप्रदेश को मिला 25वां अभयारण्य

भोपाल (आरएनएस)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की जैव विविधता संरक्षण के लिए की गई पहल पर मध्यप्रदेश को एक और नया अभयारण्य मिल गया है।

सागर जिले के 258.64 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र में नया अभयारण्य बनाया जा रहा है। इस नये अभयारण्य को %डॉ. भीमराव अंबेडकर अभयारण्य% के नाम से जाना जायेगा। राज्य सरकार ने इस नये अभयारण्य की अधिसूचना भी जारी कर दी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया %एक्स% पर जानकारी देते हुए कहा कि यह अभयारण्य न केवल वन्य जीवों को एक सुरक्षित आश्रय प्रदान करेगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिक संतुलन और स्थानीय रोजगार सृजन की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बाबा साहेब के नाम समर्पित यह अभयारण्य संविधान निर्माता के प्रति हमारे सम्मान और प्रकृति के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। यह निर्णय समावेशी विकास एवं हमारे संकल्प की दिशा में एक नया कदम और बाबा साहेब को सच्ची श्रद्धांजलि है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर अभयारण्य, सागर जिले के उत्तर सागर वन मंडल अंतर्गत बंडा और शाहगढ़ तहसीलों के आरक्षित वन क्षेत्र में स्थापित किया गया है, जिसकी कुल सीमा 25,864 हेक्टेयर (यानी 258.64 वर्ग किलोमीटर) होगी।

विद्यार्थी और पंजीकृत फार्मासिस्ट को डिजिटल, सुलभ सेवाओं के प्रदाय लिए मध्यप्रदेश सरकार संकल्पित- राज्य मंत्री पटेल

भोपाल (आरएनएस) लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्य मंत्री श्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए संकल्पित है कि हर विद्यार्थी और पंजीकृत फार्मासिस्ट को बिना किसी विलंब के डिजिटल, सुलभ और प्रभावी सेवाएं उपलब्ध हों। राज्य मंत्री श्री पटेल ने मध्यप्रदेश स्टेट फार्मेसी काउंसिल, भोपाल कार्यालय का दौरा कर पंजीकरण प्रक्रिया की सम्पूर्ण कार्य प्रणाली का अवलोकन किया। पंजीकरण प्रक्रिया को सरल, सुगम, पारदर्शी एवं छात्र हितैषी बनाने के लिए प्राप्त किए सुझाव राज्य मंत्री श्री पटेल ने काउंसिल के अधिकारियों एवं स्टॉफ से संवाद कर पंजीकरण प्रक्रिया को और अधिक सरल, सुगम, पारदर्शी एवं छात्र हितैषी बनाने के संबंध में आवश्यक सुझाव प्राप्त किए। उन्होंने तकनीकी माध्यमों से प्रक्रिया को त्वरित और प्रभावी बनाने पर जोर दिया। राज्य मंत्री श्री पटेल ने कहा कि प्रदेश में फार्मेसी के किसी भी छात्र एवं अभ्यर्थी को पंजीकरण में अनावश्यक परेशानी न हो और सभी प्रक्रियाएं पारदर्शी एवं समयबद्ध रूप से संचालित हों इसके लिए प्रभावी प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि स्वास्थ्य शिक्षा और पंजीकरण से जुड़ी संस्थाओं में निरंतर सुधार और नवाचार के माध्यम से ही छात्र हितों की रक्षा की जा सकती है। फार्मेसी काउंसिल की कार्यप्रणाली को और अधिक सुदृढ़ करने हेतु राज्य सरकार हरसंभव प्रयास कर रही है। प्रभारी रजिस्ट्रार श्रीमती माया अवस्थी, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

उच्च शिक्षा मंत्री ने एनआईटीटीटीआर में लोकमाता अहिल्याबाई = राष्ट्र पुनरुत्थान की संकल्पना विषयक दो दिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन का किया शुभारंभ

भारतीय ज्ञान परम्परा की महानायिका पुण्यश्लोका लोकमाता अहिल्याबाई का जीवन चरित्र है प्रेरणापुंज-उच्च शिक्षा मंत्री परमार

भोपाल (आरएनएस) उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने शुक्रवार को भोपाल के श्यामला हिल्स स्थित राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईटीटीटीआर) के सभागृह में पुण्यश्लोक अहिल्याबाई जी होलकर के त्रिशताब्दी जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित लोकमाता अहिल्याबाई = राष्ट्र पुनरुत्थान की संकल्पना विषय पर आयोजित 2 दिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में सहभागिता की। सत्र को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि पुण्यश्लोका अहिल्याबाई होल्कर भारतीय ज्ञान परम्परा की महानायिका, सुशासन और लोक कल्याण की प्रतिमूर्ति हैं। उनका जीवन, सम्पूर्ण राष्ट्र के उत्थान को समर्पित रहा है। उनके कालखंड में नैतिक सत्ता विद्यमान थी। सामाजिक समरसता, न्याय और सुरक्षा के मजबूत स्तंभ, उनके कृतित्व की पहचान हैं। उनकी लोक समर्पित दृष्टि, दूरदर्शितापूर्ण नीतियां, कूटनीतिक कौशल, लोक कल्याणकारी प्रबंधन और पुरुषार्थ, भारत के गौरवशाली इतिहास को परिलक्षित करते हैं। लोकमाता अहिल्याबाई के जीवन चरित्र के विविध आयामों की वर्तमान संदर्भ में, राष्ट्र के पुनर्निर्माण में उपयोगिता सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। मंत्री श्री परमार ने कहा कि लोकमाता अहिल्याबाई का जीवन चरित्र, प्रेरणापुंज है। उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उत्कृष्ट प्रबंधन एवं चातुर्य से युद्ध कौशल का प्रकटीकरण किया। आदर्श नैतिक सत्ता के लिए संयुक्त परिवार प्रबंधन को मजबूत करने में लोकमाता अहिल्याबाई का योगदान भी अनुकरणीय है। उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने कहा कि भारत का गौरवशाली इतिहास; शौर्य, पराक्रम, राजकीय पद्धति एवं ज्ञान से समृद्ध रहा है। अतीत के विभिन्न कालखंडों में विदेशी इतिहासकारों द्वारा भारतीय इतिहास का गलत चित्रण किया गया। स्वतंत्रता के कई दशकों बाद भी उन्हीं पदचिह्नों का अनुसरण किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारतीय इतिहास के साथ किए गए इस छल से मुक्त होने का सौभाग्यशाली अवसर दिया है।

भारत की अपनी शिक्षा नीति में, भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश किया गया है। उन्होंने कहा कि यह भारतीय ज्ञान परम्परा लोकमाता अहिल्या बाई के जीवन चरित्र में राजकीय प्रबंधन, सामाजिक सद्भावना, समरसता और एकात्मकता के विभिन्न आयामों में परिलक्षित होती है।

भगवान शंकर के दिव्य श्रृंगार में, अब वाले श्रृंगार ने तो मानों दाँतों तले अँगुलि दबाने को विवश कर दिया था। कारण कि भगवान शंकर ने अपनी छाती पर एक माला पहन रखी है। वह माला न तो कोई स्वर्ण धातु से बनी है, और न ही पुष्प इत्यादि की। जी हाँ! वह माला बनी है 'नरमुण्डों' की। खोपड़ियों को एक सूत्र में बाँध कर गले में लटका दिया है। जिसे शिवगण बड़े रौब से माला की संज्ञा दे रहे हैं। भला ऐसी भी माला की कल्पना किसी ने की होगी? यह तो बुद्धि की सीमा से परे सकी बात हो गई।

भारत-चीन रिश्तों में सुधार के संकेत

आजकल कूटनीतिक जगत में भारत-चीन संबंधों में सुधार को लेकर काफी चर्चा है। 2020 में लद्दाख की गलवान घाटी में हुए घटनाक्रम के बाद पिछले वर्ष अक्टूबर में रूस में आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच मुलाकात हुई थी। इस बैठक में दोनों शीर्ष नेताओं ने सीमा पर तनाव कम करने और द्विपक्षीय संबंधों को पटरी पर लाने का प्रयास किया था। विवाद के कुछ क्षेत्रों से सैनिकों की वापसी जरूर हुई लेकिन अन्य मामलों में प्रगति नहीं हुई। इधर, अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप के दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद दुनिया में बहुत तेजी से बदलाव हो रहे हैं। ट्रंप प्रशासन के फैसलों से अमेरिका की घरेलू राजनीति और अंतरराष्ट्रीय राजनीति का नक्शा बदल रहा है। अमेरिका और यूरोपीय देशों के बीच तनातनी बढ़ रही है तो दूसरी ओर राष्ट्रपति ट्रंप और राष्ट्रपति पुतिन के बीच जुगलबंदी आकार ले रही है। इस बदलते अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में भारत और चीन ने कुछ लचीला रुख अपनाया है जिससे आशा बंधती है कि द्विपक्षीय संबंध पटरी पर आ सकते हैं। एक अप्रैल, 1950 को दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संबंध हुआ था। नई दिल्ली और बीजिंग के कूटनीतिक रिश्तों के 75 वर्ष पूरे होने पर दोनों देशों के राष्ट्रपतियों के बीच शुभकामनाओं और पारस्परिक रिश्तों को और बेहतर बनाने के संदेशों का आदान-प्रदान हुआ। राष्ट्रपति जिनपिंग ने भारतीय राष्ट्रपति द्रोपदी मुमरु को प्रेषित अपने संदेश में दोनों देशों के रिश्तों के द्योतक ड्रैगन और हाथी के बीच बेहतर तालमेल बनाने की बात की जबकि राष्ट्रपति मुमरु ने कहा कि भारत और चीन के बीच स्थाई, स्थिर और सौहार्दपूर्ण संबंध का फायदा नई दिल्ली और बीजिंग के अलावा पूरी दुनिया को मिलेगा।

बेलगाम फीस की वसूली- प्राइवेट स्कूलों की मनमानी पर लगाम कब लगेगी?

दिल्ली के कई प्राइवेट स्कूलों के बाहर मनमानी फीस बढ़ोतरी के खिलाफ अभिवावक प्रदर्शन कर रहे हैं लेकिन कहीं कोई सुनवाई नहीं हो रही है। वहीं वसंतकुंज स्थित एक प्राइवेट स्कूल ने तो अभिभावकों के स्कूल परिसर में आने पर प्रतिबंध तक लगा दिया है।

प्राइवेट स्कूलों द्वारा फीस में बेलगाम बढ़ोतरी की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। प्राइवेट स्कूलों के संचालकों में मुनाफा कमाने का लालच इस कदर बढ़ता जा रहा है कि वे सारी सीमाओं को तोड़ते जा रहे हैं। स्कूल से जबरदस्ती महंगी किताबें खरीदने के लिए मजबूर करने का मामला हो या फिर तय की गई दुकानों से ही घटिया क्वालिटी की ड्रेस ज्यादा कीमत पर खरीदने का दबाव हो, ऐसा लगता है कि इनपर कोई कानून या नियम लागू नहीं होता है।

प्राइवेट स्कूलों की लॉबी इतनी ज्यादा मजबूत हो गई है कि अब इन्हें सरकारों का भी कोई भय नहीं रहा है। शुक्रवार को दिल्ली के एक नामी-गिरामी स्कूल से ऐसी खबर आई जिसने सबको स्तब्ध कर दिया। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, दिल्ली के एक बड़े स्कूल ने तो बच्चों को ही बंधक बना लिया था। बताया जा रहा है कि दिल्ली के एक बड़े स्कूल में फीस बढ़ोतरी को लेकर वहां पढ़ने वाले बच्चों के अभिवावक प्रदर्शन कर रहे थे और इस बीच स्कूल के प्रबंधकों ने कुछ बच्चों को लाइब्रेरी में बंधक बना लिया। एक न्यूज चैनल ने तो यहां तक दावा किया है कि बच्चों को लाइब्रेरी में बंद करने के मामले की जांच साउथ वेस्ट डीएम लक्ष्य सिंहल ने की और उन्होंने यह भी माना कि जब वे जांच करने स्कूल पहुंचे तो उन्होंने खुद बच्चों को लाइब्रेरी में बैठे हुए पाया। डीएम ने जांच की रिपोर्ट शिक्षा विभाग को भेज दी है। उम्मीद करते हैं कि दिल्ली की बीजेपी सरकार इस स्कूल के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करते हुए एक उदाहरण सेट करेगी ताकि भविष्य में कोई भी स्कूल इस तरह की हरकत करने के बारे में सोच भी नहीं सके।

दिल्ली के कई प्राइवेट स्कूलों के बाहर मनमानी फीस बढ़ोतरी के खिलाफ अभिवावक प्रदर्शन कर रहे हैं लेकिन कहीं कोई सुनवाई नहीं हो रही है। वहीं वसंतकुंज स्थित एक प्राइवेट स्कूल ने तो अभिभावकों के स्कूल परिसर में आने पर प्रतिबंध तक लगा दिया है। सही मायनों में कहा जाए तो यह स्कूलों की तानाशाही है और इस देश की सरकारों और लोकतांत्रिक व्यवस्था पर कई तरह के सवाल खड़े करती है।

देश की राजधानी दिल्ली में 1700 के लगभग प्राइवेट स्कूल हैं। इनमें सरकारी जमीन पर बने प्राइवेट स्कूल 448 हैं। सरकार द्वारा बनाए गए नियम के हिसाब से सभी स्कूलों को हर साल फाइनेंशियल स्टेटमेंट देना जरूरी होता है। अगर शिक्षा निदेशालय को फीस बढ़ोतरी गलत लगती है, तो वो इसे रोक सकती है और स्कूल को बढ़ी हुई फीस अभिवावकों को वापस देनी होगी।

लेकिन सरकार चुप है, अधिकारी अपना काम नहीं कर रहे हैं और इसका नतीजा स्कूलों की मनमानी के रूप में सामने आ रहा है। बताया जा रहा है कि दिल्ली के कई प्राइवेट स्कूलों ने 10 प्रतिशत से लेकर 30 प्रतिशत तक फीस बढ़ा दी है। ये स्कूल ट्यूशन फीस, डिवेलपमेंट फीस, ट्रांसपोर्ट फीस के अलावा ओरिएंटेशन फीस, एसी, स्कूल ऐप और स्मार्ट क्लास के नाम पर भी तगड़ी वसूली कर रहे हैं।

दिल्ली की बीजेपी सरकार के लिए यह एक बड़ी चुनौती से कम नहीं है। क्योंकि उनकी सरकार बनने के बाद शुरू हुए स्कूलों के नए सत्र में ही यह फीस बढ़ोतरी की गई है। ऐसे में स्वाभाविक तौर पर दिल्ली के लोगों को यह लगने लगा है कि भाजपा की सरकार बनने के बाद ही दिल्ली के प्राइवेट स्कूलों के मालिकों में मनमानी करने की हिम्मत आ गई है। यह बात अगर दिल्लीवासियों के मन में बैठ गई तो फिर बीजेपी के लिए मुश्किलें खड़ी हो जाएगी। आम आदमी पार्टी इसे एक बड़ा राजनीतिक मुद्दा बनाने की कोशिश लगातार कर रही है। समय की यह मांग है कि सरकार आगे आए और इन प्राइवेट स्कूलों की दादागिरी, मनमानी और तानाशाही भरे रवैए पर रोक लगाए या फिर कड़ी कार्रवाई करें। हालांकि यह भी एक कड़वी सच्चाई है कि प्राइवेट स्कूलों की यह मनमानी किसी एक शहर या किसी एक राज्य तक ही सीमित भर नहीं है।

मंदी आने वाली है? ग्लोबल इकोनॉमी पर ये ट्रेड वॉर भारी पड़ेगा

भारत में बाजार पहले से ही काफी नीचे आया हुआ है, लिहाजा 4त्न का झटका इसके हिस्से पड़ा। बाजार ट्रंप की एक घोषित व्यापारिक रणनीति के तहत गिरे हैं। उनसे इसके बारे में सवाल पूछा गया तो उन्होंने कहा भी कि वे किसी चीज में गिरावट नहीं चाहते, लेकिन बीमारी के इलाज के लिए कड़वी दवा भी कभी-कभी खानी पड़ती है।

डोनाल्ड ट्रंप जब से दूसरी बार राष्ट्रपति बन गए हैं तब से टैरिफ उनका सबसे पसंदीदा शब्द बन गया है। सोते-जागते, आते-जाते उनकी जुबान पर टैरिफ छाया रहता है। कनाडा को 51वां राज्य बनाना हो टैरिफ लगा दो। फेंटनिल की तस्करी रोकनी है टैरिफ लगा दो। यूक्रेन वॉर में पीस डील करानी हो टैरिफ लगा दो या धमकी दे दो। अगर आपने पिछले कुछ महीने में ट्रंप को ट्रैक किया होगा तो पता चलेगा कि टैरिफ उनका सिंगल प्वाइंट वेपन बन गया है। हर मर्ज की एक ही दवा। कभी आग लग जाए तो उसके जवाब में कहीं ट्रंप टैरिफ न लगा दें। डोनाल्ड ट्रंप पॉलिटिक्स में आने से पहले बिजनेसमैन थे। उन्हें डिप्लोमेसी से ज्यादा प्रेशर डालकर डील पर साइन कराने का अनुभव है। जिस तरह हिंदी सिनेमा में विलेन होते थे, डील से पहले नोटों से भरा सूटकेस खोलकर दिखाने वाले। दुनियाभर के शेयर बाजार में भूचाल मचा हुआ है। 7 अप्रैल 2025, दिन ऐसे हर बाजार में जहां शेयर खरीदे बेचे जाते हैं, 4-10त्न तक की गिरावट देखी गई। जापान और दक्षिण कोरिया के बाजारों में सर्किट लगा। यानी एक सीमा से ज्यादा गिरावट पर खरीद-बिक्री का काम अपने आप बंद हो गया। भारत में बाजार पहले से ही काफी नीचे आया हुआ है, लिहाजा 4त्न का झटका इसके हिस्से पड़ा। बाजार ट्रंप की एक घोषित व्यापारिक रणनीति के तहत गिरे हैं। उनसे इसके बारे में सवाल पूछा गया तो उन्होंने कहा भी कि वे किसी चीज में गिरावट नहीं चाहते, लेकिन बीमारी के इलाज के लिए कड़वी दवा भी कभी-कभी खानी पड़ती है।

शराबबंदी मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति बड़ी मिसाल

ओपी सांस्कृत्यायन

सार्वजनिक जीवन में नैतिक शुचिता और पारदर्शिता बड़ी दरकार है। इस मूल्यबोध की समझ दुनिया में चाहे जब बनी-बिगड़ी हो भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के दिनों से इसे महत्त्व मिला। महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता आंदोलन की तो कसौटी ही यह रही कि इसने अहिंसक मूल्य-निष्ठा को सर्वोपरि माना। 1917 में गांधी जब चंपारण में नील किसानों पर जुल्म के खिलाफ सत्याग्रह की सैद्धांतिकी का जमीनी परीक्षण कर रहे थे, तब उन्होंने कहा था कि बिहार की धरती पर उन्हें अहिंसा देवी के दर्शन हुए। दर्शन का यह बोध जहां आगे चल कर उनके नेतृत्व में चले स्वाधीनता संघर्ष में दिखा वहीं सेवा से जुड़े रचनात्मक कार्यक्रमों को लेकर भी उन्होंने एक गंभीर तकाजे को देश-समाज के सामने रखा।

दुर्भाग्य रहा देश का कि आजादी के करीब आते-आते ये सारे बोध और तकाजे कमजोर पड़ते गए। आजाद भारत में अहिंसक मूल्य-निष्ठा की आखिरी गूंज बिहार आंदोलन के दौरान सुनाई पड़ी। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में आरंभ हुए आंदोलन की नाटकीय राजनीतिक परिणिति की चर्चा आज खूब होती है, पर ज्यादा जरूरी है यह समझना कि इस आंदोलन की वैचारिकी जेपी ने क्या तय की थी। कांग्रेस की समाजवादी धारा के पुरोधा रहे जेपी के मन में गांधी को लेकर असंदिग्ध आस्था थी। इसलिए जब संपूर्ण क्रांति की अलख के साथ वे सड़कों पर उतरे तो उन्होंने अपने साथ चल रही जमात के सामने अहिंसक मूल्य-निष्ठा की कसौटी सबसे पहले रखी।

यह और बात है कि आपातकाल की घोषणा के बाद संपूर्ण क्रांति सीधे-सीधे लोकतंत्र और संविधान को बचाने की फौरी लड़ाई के रूप में तब्दील हुई और देश में प्रचलित राजनीतिक संस्कृति में बदलाव की मुराद दम तोड़ गई। इतिहास का यह भी दिलचस्प चक्र है कि आज बिहार सत्ता और राजनीति में ऐसे ही कुछ अहिंसक मूल्यों को लेकर फिर से चर्चा में है। बिहार में शराबबंदी के नौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। राज्य में शराबबंदी का फैसला ऐसा है, जो राजनीतिक नफा-नुकसान को छोड़कर इस निर्णय को लेने के नीतीश कुमार के नैतिक साहस को तारीखी अहमियत देता है। यह अहमियत तब ज्यादा समझ में आती है जब हम देखते हैं कि एक तरफ दिल्ली के मुख्यमंत्री के पद पर बैठा व्यक्ति शराब घोटाले में जेल की हवा खाता है, तो वहीं अपने राज्य में शराबबंदी का फैसला लेने वाला राजनेता नौ साल बाद भी अपनी नैतिकता पर कायम है। गांधी की वैचारिक चेतना और दृष्टि में मद्य निषेध को लेकर एक गंभीर आग्रह रहा है।

आज आजादी के इतने समय बाद इस तरह के किसी नैतिक जोर या संकल्प की बात बेमानी लगती है। खास तौर पर बीते कुछ दशकों में समय और समाज ने जिस जीवन-दृष्टि को तेजी से अंगीकार किया है, उसमें न तो निजी और न ही सार्वजनिक जीवन में किसी नैतिक दरकार के लिए जगह छोड़ी है। सभ्यता और संस्कृति के इतिहास में यह एक ऐसा दौर है, जिसके नैतिक पराभव ने मनुष्य को विश्व युद्ध के बाद एक नई अधोगति तब पहुंचा दिया है।

तिरुपति बालाजी मंदिर में दिया जाता है बालों का दान, जानिए कब और कैसे शुरू हुई ये परंपरा

जैसा कि आप सभी जानते होंगे कि तिरुपति मंदिर में बाल दान करने की परंपरा काफी पुरानी है। यह भारत के सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक तिरुपति बालाजी मंदिर है। तिरुपति बालाजी का यह पवित्र धाम श्री वेंकटेश्वर स्वामी को समर्पित है। माना जाता है कि इस मंदिर में एक बार दर्शन करने मात्र से ही जातक के सभी पापों का अंत हो जाता है। यह आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले की तिरुमाला पर्वत पर स्थित है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि तिरुपति मंदिर में बाल दान करने की परंपरा की शुरूआत कब और कैसे हुई।

एक समय की बात है कि भगवान वेंकटेश्वर नीलाद्रि पर्वत पर सो रहे थे। उसी समय देवी नीलाद्रि वहां पहुंची और उन्होंने देखा कि वेंकटेश्वर जी के सिर पर एक धब्बा है। इस धब्बे को ढकने के लिए उन्होंने अपने बालों को खींच लिया और उसे भगवान वेंकटेश्वर के सिर पर लगा दिया। जिससे कि उनकी सुंदरता और भी ज्यादा निखर सके। वहीं जब जगत के स्वामी उठे तो देखा कि उनके उस स्थान से खून निकल रहा है, जहां पर वह धब्बा था और दूसरी तरफ देवी नीलाद्री के सिर से भी खून निकल रहा है।

मन चंगा तो कठौती में गंगा- संत रविदास

महान संत, दर्शनशास्त्री, कवि, समाज-सुधारक और ईश्वर के अनुयायी संत शिरोमणि रविदास के जन्म को लेकर सबकी अपनी-अपनी राय है। कुछ लोगों का मानना ??है कि उनका जन्म 1376-77 के आसपास हुआ था, कोई 1399 ई. कुछ दस्तावेजों के अनुसार रविदास 1450 और 1520 के बीच रहे। मान्यता के अनुसार रविदास का जन्म माघ पूर्णिमा के दिन वाराणसी के निकट सीर गोवर्धन गांव में हुआ था। उनकी माता कालसा देवी थीं और उनके पिता संतोख दास थे। अलौकिक, संत रविदास भारत में 15 वीं शताब्दी के संत परंपरा में एक चमकते नेतृत्वकर्ता और उत्तर भारतीय भक्ति आंदोलन को नेतृत्व देते थे। उन्होंने अपने महान कविता लेखन के जरिए विविध प्रकार के आध्यात्मिक और सामाजिक संदेश दिए। उन्होंने समानता पर जोर दिया जहां प्रत्येक नागरिक को सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक मानवाधिकारों का आनंद मिलेगा। उनके भक्ति छंद सिख धर्मग्रंथों, गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हैं।

स्तुत्य, भक्ति आंदोलन के प्रमुख संतों में से एक रविदास ने 120 वर्ष की आयु में 1540 ईस्वी में वाराणसी में देहत्याग दिया। रविदास के अनमोल वचन थे कि कोई भी व्यक्ति छोटा या बड़ा अपने जन्म के कारण नहीं बल्कि अपने कर्म के कारण होता है। व्यक्ति के कर्म ही उसे ऊंचा या नीचा बनाते हैं। हमें हमेशा कर्म करते रहना चाहिए और साथ साथ मिलने वाले फल की भी आशा नहीं छोड़नी चाहिए क्योंकि कर्म हमारा धर्म है और फल हमारा सौभाग्य है। जिस प्रकार तेज हवा के कारण सागर में बड़ी-बड़ी लहरें उठती है और फिर सागर में समा जाती है। उनका अलग अस्तित्व नहीं होता इसी प्रकार परमात्मा के बिना मानव का भी कोई अस्तित्व नहीं है। मोह माया में फंसा जीव भटकता रहता है इस माया को बनाने वाला ही मुक्तिदाता है। उत्कंठ, संत ?रविदास की मशहूर कहावत 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' को ज्यादातर लोगों को बोलते हुए सुना होगा। इस कहावत का अर्थ है अगर व्यक्ति का मन शुद्ध है, किसी काम को करने की उसकी नीयत अच्छी है तो उसका हर कार्य गंगा के समान पवित्र है। दरअसल इस कहावत का जन्म उस समय हुआ जब एक बार संत रविदास के कुछ विद्यार्थी और अनुयायी ने पवित्र नदी गंगा में स्नान के लिये पूछा तो उन्होंने ये कह कर मना किया कि उन्होंने पहले से ही अपने एक ग्राहक को जूता देने का वादा कर दिया है तो अब वही उनकी प्राथमिक जिम्मेदारी है। रविदास जी के एक विद्यार्थी ने उनसे दुबारा निवेदन किया तब उन्होंने कहा उनका मानना है कि मन चंगा तो कठौती में गंगा मतलब शरीर को आत्मा से पवित्र होने की जरुरत है ना कि किसी पवित्र नदी में नहाने से, अगर हमारी आत्मा और हृदय शुद्ध है

मंगलवार को ऐसे करेंगे श्रीराम की पूजा तो मिलेगा हनुमान जी का आशीर्वाद, दूर होगी हर बाधा

सनातन धर्म में मंगलवार का दिन राम भक्त हनुमान जी को समर्पित होता है। यह दिन भगवान श्रीराम और हनुमान जी की पूजा के लिए शुभ माना जाता है। माना जाता है कि जो भी जातक सच्चे मन से मंगलवार के दिन व्रत करते है और हनुमान जी की पूजा करते हैं। उनकी हर मनोकामना पूरी होती है। कहा जाता है कि संकटमोचन हनुमान जी की कृपा मिलने पर सभी संकट दूर होते हैं। साथ ही व्यक्ति को भगवान श्रीराम की कृपा प्राप्त होती है। इसलिए हनुमान जी और राम जी की कृपा पाने के लिए मंगलवार को विधि-विधान से पूजा करनी चाहिए। इसके साथ ही राम रक्षा स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। वहीं आरती कर पूजा को संपन्न करें और अंत में पूजा में हुई भूल-चूक के लिए क्षमायाचना करें। ऐसा करने से व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

वक्फ अधिनियम में संशोधन

विनीत नारायण

वक्फ संशोधन बिल, जिसे हाल में भारतीय संसद में पेश किया गया और 2-3 अप्रैल, 2025 को लोक सभा और राज्य सभा से पारित किया गया, देश में गहन बहस का विषय बन गया है। यह बिल 1995 के वक्फ अधिनियम में संशोधन करने और वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन को अधिक पारदर्शी और समावेशी बनाने का दावा करता है। सरकार इसे प्रगतिशील कदम के रूप में पेश कर रही है, जबकि विपक्ष और कई मुस्लिम संगठन इसे धार्मिक स्वायत्तता पर हमला मानते हैं। इस लेख में हम इस बिल के समर्थन और विरोध के तकरे को तटस्थ दृष्टिकोण से देखेंगे और इसके संभावित प्रभावों का आकलन करेंगे। वक्फ इस्लामी परंपरा है जिसमें कोई व्यक्ति अपनी संपत्ति को धार्मिक, शैक्षिक या परोपकारी उद्देश्यों के लिए समर्पित कर देता है। भारत में वक्फ संपत्तियों का प्रबंधन 1995 के वक्फ अधिनियम के तहत होता है, जिसके अंतर्गत राज्य वक्फ बोर्ड और केंद्रीय वक्फ परिषद कार्य करते हैं। वक्फ संशोधन बिल, 2024 में कई बदलाव प्रस्तावित हैं, जैसे वक्फ बोर्ड में गैर-मुस्लिम और महिला सदस्यों की अनिवार्यता, संपत्ति सर्वेक्षण के लिए कलेक्टर की भूमिका और विवादों में हाई कोर्ट की अपील का प्रावधान। सरकार का कहना है कि यह बिल वक्फ पण्राली में पारदर्शिता और जवाबदेही लाएगा जबकि विरोधी इसे वक्फ की मूल भावना के खिलाफ मानते हैं। इस बिल का समर्थन करने वालों का कहना है कि वक्फ बोडरे में भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन की शिकायतें लंबे समय से चली आ रही हैं।

देश में 8.7 लाख से अधिक वक्फ संपत्तियां हैं, जिनकी कीमत लगभग 1.2 लाख करोड़ रु पये आंकी गई है, लेकिन इनका उपयोग गरीब मुस्लिम समुदाय के कल्याण के लिए प्रभावी ढंग से नहीं हो पा रहा। कलेक्टर द्वारा संपत्ति सर्वेक्षण और रिकॉर्ड डिजिटलीकरण जैसे प्रावधानों से इन संपत्तियों का बेहतर प्रबंधन संभव होगा। बिल में वक्फ बोर्ड में कम से कम दो महिलाओं और गैर-मुस्लिम सदस्यों को शामिल करने का प्रावधान भी है। समर्थकों का तर्क है कि इससे बोर्ड में लैंगिक और सामाजिक समावेशिता बढ़ेगी। विशेष रूप से पसमांदा मुस्लिम समुदाय, जो सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़ा है, इस बिल का समर्थन करता है, क्योंकि उनका मानना है कि मौजूदा व्यवस्था में धनी और प्रभावशाली लोग वक्फ संपत्तियों पर कब्जा जमाए हुए हैं।

पहले वक्फ ट्रिब्यूनल का फैसला अंतिम माना जाता था, जिसे अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती थी। नये बिल में हाई कोर्ट में अपील का अधिकार दिया गया है, जिसे समर्थक संविधान के अनुरूप और न्यायसंगत मानते हैं। उनका कहना है कि इससे वक्फ बोर्ड के मनमाने फैसलों पर अंकुश लगेगा। बिल में यह शर्त भी जोड़ी गई है कि बिना दान के कोई संपत्ति वक्फ की नहीं मानी जाएगी। समर्थकों का कहना है कि इससे उन मामलों में कमी आएगी जहां वक्फ बोर्ड बिना ठोस सबूत के संपत्तियों पर दावा करता था, जिससे आम लोगों को परेशानी होती थी।

वहीं इस बिल के विरोध में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और विपक्षी दलों का कहना है कि यह बिल वक्फ की मूल भावना को कमजोर करता है।

वक्फ धार्मिक परंपरा है और इसमें गैर-मुस्लिम सदस्यों को शामिल करना इसकी पवित्रता को नुकसान पहुंचाएगा। बिल में कलेक्टर को वक्फ संपत्तियों का सर्वेक्षण करने और उनकी स्थिति तय करने का अधिकार दिया गया है। विरोधियों का कहना है कि यह सरकारी हस्तक्षेप है, जो वक्फ बोर्ड की स्वायत्तता को खत्म कर देगा। उनका तर्क है कि कलेक्टर, जो ज्यादातर गैर-मुस्लिम हो सकता है, वक्फ के धार्मिक महत्त्व को नहीं समझ पाएगा। विपक्ष का दावा है कि यह बिल संविधान के अनुच्छेद 25 और 26 का उल्लंघन करता है, जो धार्मिक स्वतंत्रता और धार्मिक संस्थाओं के प्रबंधन का अधिकार देता है। उनका कहना है कि वक्फ एक इस्लामी परंपरा है, और इसमें सरकारी दखल अल्पसंख्यक अधिकारों पर हमला है। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और अन्य संगठनों ने बिल के खिलाफ देशव्यापी विरोध प्रदर्शन किए हैं। ईद और जुमातुल विदा जैसे अवसरों पर काली पट्टी बांध कर नमाज पढ़ने की अपील इसका उदाहरण है। विरोधियों का कहना है कि यह बिल मुस्लिम समुदाय को अपने ही धर्म से दूर करने की साजिश है।

वक्फ संशोधन बिल के लागू होने से कई सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव देखने को मिल सकते हैं। यदि यह पारदर्शिता और समावेशिता को बढ़ाता है, तो वक्फ संपत्तियों का उपयोग गरीब मुस्लिमों, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों के कल्याण के लिए बेहतर तरीके से हो सकता है। दूसरी ओर, यदि यह धार्मिक स्वायत्तता को कमजोर करता है या सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाता है, तो इससे मुस्लिम समुदाय में असंतोष और अविश्वास बढ़ सकता है। राजनीतिक दृष्टिकोण से यह बिल सत्तारूढ़ एनडीए के लिए जोखिम भरा कदम है। जहां बीजेपी इसे हिन्दू मतदाताओं के बीच वक्फ बोर्ड की कथित मनमानी के खिलाफ एक कदम के रूप में पेश कर सकती है, वहीं सहयोगी दल जैसे जेडीयू टीडीपी और आरएलडी को अपने मुस्लिम समर्थकों के गुस्से का सामना करना पड़ सकता है। मोदी सरकार संसद में बहुमत के चलते इस बिल को अपने पिछले दो कार्यकालों में आराम से ला सकती थी लेकिन तीसरे कार्यकाल में इस बिल को लाकर भाजपा ने सहयोगी दलों को पसोपेश में डाल दिया है। वक्फ संशोधन बिल जटिल मुद्दा है, जिसमें सुधार की आवश्यकता और धार्मिक संवेदनशीलता के बीच संतुलन बनाना जरूरी है। समर्थकों के लिए यह भ्रष्टाचार खत्म करने और वक्फ को आधुनिक बनाने का अवसर है, जबकि विरोधियों के लिए धार्मिक पहचान और स्वायत्तता पर हमला है। सच्चाई शायद इन दोनों के बीच कहीं है। बिल का असली प्रभाव इसके कार्यान्वयन पर निर्भर करेगा। इसे संवेदनशीलता और पारदर्शिता के साथ लागू किया जाता है, तो यह सकारात्मक बदलाव ला सकता है। लेकिन यदि जल्दबाजी या राजनीतिक लाभ के लिए इसे इस्तेमाल किया गया, तो सामाजिक तनाव को और गहरा सकता है। अंततः इस बिल की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि यह वक्फ की मूल भावना को कितना सम्मान देता है, और समाज के सभी वगरे को कितना लाभ पहुंचाता है।

-:: आज का राशिफल ::-

मेष राशि: आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है। आज आप एक से अधिक स्रोतों से आय प्राप्त करेंगे। शासन व प्रशासन के कार्यों में सावधानी बरतें। आज निवेश संबंधी योजनाओं को गति मिलेगी।

वृष राशि: आज का दिन आपके लिए उत्तम रहने वाला है। दिनचर्या में सुबह की सैर को शामिल करेंगे, जिससे आप अपने आप को काफी ऊर्जावान महसूस करेंगे। मित्र या रिश्तेदार आपसे आर्थिक मदद मांग सकता है आप उसे निराश नहीं करेंगे।

मिथुन राशि: आज का दिन आपके लिए उत्तम रहने वाला है। आज आपकी योजनाओं को गति मिलेगी। आज आपकी कुछ नए लोगों से मुलाकात होगी। आज आपको बड़ों का साथ व सहयोग भरपूर मात्रा में मिलेगा।

कर्क राशि: आज आपका दिन बेहद खुशहाल रहने वाला है। आज अपने बिजनेस को आगे बढ़ाने की नयी योजना बनायेंगे, जिससे आपकी कामयाबी आसमान की बुलंदियों पर होगी।

सिंह राशि: आज का दिन आपके लिए आनंदायक रहने वाला है। आपको अपनी वाणी की मधुरता को बनाए रखना है। मित्र आपसे मिलने आयेंगे, जिनसे मिलकर अपकी यादें ताजा होंगी।

कन्या राशि: आज आपका दिन आपके लिए खुशियां लाने वाला है। परिवार में आपके अच्छे काम की तारीफ़ होगी। महिलाओं के लिए आज का दिन बेहद ख़ास रहने वाला है।

तुला राशि: आज का दिन आपके लिए सुनहरा रहने वाला है। आपका विनम्र स्वभाव सराहा जाएगा। आपका धन कहां खर्च हो रहा है, इस पर आपको नजर बनाए रखने की जरूरत है,

वृश्चिक राशि: आज आपका दिन कॉन्फिडेंस से भरा रहेगा। नवविवाहित दंपत्ति के बीच आज मीठी नोक-झोक होगी, इससे रिश्ते में मधुरता बढ़ेगी। आप अपने मित्रों के साथ किसी मनोरंजन के कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे।

धनु राशि: आज का दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहने वाला है। आज किसी कानूनी मामले में जल्दबाजी न दिखाएं। आज अपने काम को समय रहते पूरा कर लेंगे। किसी नए काम की शुरुआत करना चाह रहे हैं तो दिन शुभ है।

मकर राशि: आज का दिन फेवरेबल रहने वाला है। स्वास्थ्य के लिहाज से दिन अच्छा रहेगा। आज आपके बढ़ते खर्चे आपको थोड़ी उलझन में डाल सकते है। आज किसी संपत्ति का सौदा जल्दबाजी में न करें।

कुंभ राशि: आज का दिन आपके अनुकूल रहेगा। आज परिवार के साथ घर पर मूवी देखने की प्लानिंग करेंगे। सेहत के लिहाज से आप खुद को तंदुरुस्त महसूस करेंगे।

मीन राशि: आज आपका दिन अच्छा रहेगा। नौकरी में तरक्की मिलने से आपकी खुशी का ठिकाना नहीं रहेगा। आज कुछ बड़ा और अलग काम करने की सोच सकते है। संतान के साथ आज किसी धार्मिक स्थल पर घूमने जायेंगे।

आतिशी ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर दिल्ली की मुख्यमंत्री के पति मनीष गुप्ता की एक तस्वीर शेयर की है। इसके साथ ही उन्होंने लिखा, इस तस्वीर को ध्यान से देखिए। एमसीडी, डीजेबी, पीडब्ल्यूडी और डीयूएसआईबी अधिकारियों की बैठक लेने वाले व्यक्ति मनीष गुप्ता हैं, जो दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के पति हैं। ग्रामीण शासन व्यवस्था से इस स्थिति की तुलना करते हुए आतिशी ने लिखा, पहले हम सुनते थे कि अगर गांव में महिला सरपंच चुनी जाती है, तो सारा सरकारी काम उसका पति संभालेगा।

मैं काशी का हूं और काशी मेरी है, पूरे पूर्वांचल के युवाओं को यहां के विकास का लाभ मिलता है : पीएम मोदी

वाराणसी (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शुक्रवार को अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी के एक दिवसीय दौरे पर पहुंचे। काशीवासियों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। इस दौरान उन्होंने 3,900 करोड़ रुपए की 44 परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। उन्होंने मेहंदीगंज में आयोजित विशाल जनसभा में भोजपुरी में भी काशीवासियों से संवाद किया। अपने संबोधन में उन्होंने बार-बार काशी के प्रति अपने गहरे लगाव को दोहराया। उन्होंने कहा, काशी मेरी है और मैं काशी का हूं।

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में काशी के बदलते स्वरूप पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पिछले एक दशक में काशी ने विकास की नई गति पकड़ी है। काशी अब केवल पुरातन नहीं, बल्कि प्रगतिशील भी है। इसने आधुनिकता को अपनाया है, विरासत को संजोया है और भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए मजबूत कदम उठाए हैं। उन्होंने काशी को पूर्वांचल के आर्थिक नक्शे का केंद्र बताया और कहा, जौने काशी के स्वयं महादेव चलावेलन, आज उहे काशी पूर्वांचल के विकास के रथ के खींचत हौ।

उन्होंने काशी की सांस्कृतिक धरोहर और आधुनिक बुनियादी ढांचे के सामंजस्य को भारत के विकास का एक अनूठा मॉडल करार दिया।

उन्होंने काशी और पूर्वांचल के लिए 3,900 करोड़ रुपए की 44 परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इनमें कनेक्टिविटी को मजबूत करने वाले इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स, गांव-गांव तक नल से जल पहुंचाने की योजनाएं, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार एवं खेल के क्षेत्र में नई पहल शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि ये परियोजनाएं पूर्वांचल को विकसित बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होंगी। काशी के हर निवासी को इन योजनाओं से लाभ मिलेगा। इन परियोजनाओं में लाल बहादुर शास्त्री एयरपोर्ट के विस्तार, भिखारीपुर और मंडुआडीह में फ्लाईओवर और बनारस-सारनाथ को जोड़ने वाले नए पुल जैसे महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स शामिल हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने आयुष्मान वय वंदना कार्ड का भी वितरण किया। इस योजना के तहत 70 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्गों को मुफ्त इलाज की सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि आज बुजुर्गों के चेहरों पर संतोष का भाव मेरे लिए इस योजना की सबसे बड़ी सफलता है। अब इलाज के लिए न जमीन बेचनी पड़ेगी, न कर्ज लेना पड़ेगा। आपके इलाज का खर्च अब सरकार उठाएगी। काशी में अब तक 50 हजार आयुष्मान वय वंदना कार्ड वितरित किए जा चुके हैं, जिससे हजारों परिवारों को राहत मिली है। प्रधानमंत्री ने रमेश कुमार, अनिल कुमार और छिद्दु को जीआई पंजीकृत प्रमाणपत्र सौंपे। उन्होंने बताया कि वाराणसी और आसपास के क्षेत्रों के 30 से अधिक उत्पादों को जीआई टैग प्रदान किया गया है, जिनमें तबला, शहनाई, ठंडई, लाल भरुआ मिर्च, लाल पेड़ा और तिरंगा बर्फी शामिल हैं। उन्होंने कहा कि जीआई टैग केवल एक प्रमाणपत्र नहीं, बल्कि हमारी मिट्टी की पहचान का पासपोर्ट है। ये काशी के हुनर को वैश्विक बाजारों तक पहुंचाएगा। उन्होंने यूपी को जीआई टैगिंग में देश में नंबर वन बताया और कहा कि यह स्थानीय कारीगरों और उत्पादकों के लिए गर्व का क्षण है।

पीएम मोदी ने बनास डेयरी के पशुपालकों को 106 करोड़ रुपए की बोनस राशि हस्तांतरित की। उन्होंने इसे पशुपालकों की मेहनत का पुरस्कार बताया और कहा कि ये कोई उपहार नहीं, बल्कि आपकी तपस्या का फल है। बनास डेयरी ने काशी में हजारों परिवारों की आर्थिक स्थिति को बदला है, खासकर महिलाओं को सशक्त बनाकर। पूर्वांचल की अनेक बहनें अब लखपति दीदी बन चुकी हैं। पहले गुजारे की चिंता थी, अब उनके कदम खुशहाली की ओर बढ़ रहे हैं।

उन्होंने बताया कि भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है, जिसमें पिछले 10 वर्षों में 65 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। बनास डेयरी काशी संकुल के 1 लाख किसानों से दूध संग्रह कर रहा है और गिर गायों का वितरण कर पशुपालकों को सशक्त बना रहा है।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के साथ रायगढ़ में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित की.

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू पुर्तगाल और स्लोवाकिया की राजकीय यात्रा पूरी करने के बाद नई दिल्ली पहुंचीं.

हुर्रियत से जुड़े 12 संगठनों ने तोड़ा अलगाववाद से नाता, पीएम मोदी के एक भारत, श्रेष्ठ भारत सपने की जीत : अमित शाह

नई दिल्ली (आरएनएस)। कश्मीर घाटी में अलगाववादी संगठन हुर्रियत को बड़ा झटका लगा है। जम्मू-कश्मीर मास मूवमेंट ने हुर्रियत कॉन्फ्रेंस से खुद को अलग कर लिया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इसकी जानकारी खुद सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए दी। उन्होंने दावा किया कि अब 12 संगठनों ने अलगाववाद से नाता तोड़ लिया है। इसके साथ ही उन्होंने इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक भारत, श्रेष्ठ भारत के दृष्टिकोण की जीत बताया।

गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, मोदी सरकार के तहत जम्मू-कश्मीर में एकता की भावना व्याप्त है। हुर्रियत से जुड़े एक अन्य संगठन जम्मू-कश्मीर मास मूवमेंट ने अलगाववाद को खारिज करते हुए भारत की एकता के लिए पूरी प्रतिबद्धता जताई है। मैं उनके इस कदम का तहे दिल से स्वागत करता हूं। उन्होंने आगे बताया, अब तक हुर्रियत से जुड़े 12 संगठन अलगाववाद से अलग हो चुके हैं और भारत के संविधान पर भरोसा जता रहे हैं।

अमित शाह ने कहा कि यह प्रधानमंत्री मोदी के एक भारत, श्रेष्ठ भारत के सपने की जीत है।

इससे पहले घाटी में तीन बड़े संगठनों ने हुर्रियत कॉन्फ्रेंस से नाता तोड़ लिया था। गृह मंत्री अमित शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इसकी जानकारी देते हुए लिखा था, जम्मू-कश्मीर इस्लामिक पॉलिटिकल पार्टी, जम्मू कश्मीर मुस्लिम डेमोक्रेटिक लीग और कश्मीर फ्रीडम फ्रंट जैसे तीन और संगठनों ने हुर्रियत से खुद को अलग कर लिया है। यह घाटी के लोगों में भारत के संविधान के प्रति विश्वास का एक प्रमुख प्रदर्शन है। पीएम मोदी का एकजुट और शक्तिशाली भारत का सपना आज और भी मजबूत हो गया है, क्योंकि अब तक 11 ऐसे संगठनों ने अलगाववाद को त्याग दिया है और इसके लिए अटूट समर्थन की घोषणा की है।

कुछ दिनों पहले गृह मंत्री अमित शाह जम्मू-कश्मीर के दौरे पर थे, जहां उन्होंने शहीद डीएसपी हुमायूं मुजम्मिल भट के परिवारवालों से मुलाकात भी की थी। उन्होंने इस मुलाकात की फोटो शेयर करते हुए लिखा था, जम्मू-कश्मीर पुलिस के डीएसपी हुमायूं मुजम्मिल भट ने 2023 में जम्मू-कश्मीर के कोकरनाग में आतंकवादियों के खिलाफ एक ऑपरेशन में सर्वोच्च बलिदान देकर वीरता और देशभक्ति की अमर मिसाल कायम की। आज श्रीनगर में शहीद के परिवार से मुलाकात की और अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त की।

पहाड़ों के बीच प्रगति का सेतु 'अंजी खड्डु'

नई दिल्ली (आरएनएस)। जब घाटियां गहरी होती हैं और पहाड़ रास्ता रोकते हैं, तब इंसान के सपने ऊंचे हो जाते हैं। कश्मीर के दिल तक पहुंचने के इन्हीं ऊंचे सपनों ने फिर से एक नई कहानी को जन्म दिया है। ये कहानी एक पुल की है जो सिर्फ लोहे और केबल से नहीं, हिम्मत और हुनर से भी बना है। ये कहानी है भारत के पहले केबल-स्टेड रेलवे ब्रिज- अंजी खड्डु ब्रिज की जो जम्मू-कश्मीर की चुनौतीपूर्ण घाटियों के बीच, अंजी नदी की गहरी खाई को पाटता है।

आगरा की शाही जामा मस्जिद में जानवर का कटा सिर फेंका, इलाके में तनाव; बड़ी संख्या में पुलिसकर्मी तैनात

आगरा (आरएनएस)। आगरा की ऐतिहासिक शाही जामा मस्जिद परिसर में शुक्रवार सुबह उस समय स्थिति तनावपूर्ण हो गई, जब वहां एक जानवर का कटा हुआ सिर फेंका मिला। इस घटना से मुस्लिम समुदाय के लोगों में भारी गुस्सा है। फज्र की नमाज के लिए मस्जिद पहुंचे लोगों ने जब यह देखा, तो तत्काल पुलिस को सूचना दी।

सूचना मिलते ही डीसीपी सिटी सोनम कुमार के नेतृत्व में भारी पुलिस बल मौके पर पहुंच गया। इलाके में तनाव को देखते हुए बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है।

पुलिस ने तुरंत मामले की जांच शुरू कर दी है। मस्जिद परिसर और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है। मस्जिद के एक सीसीटीवी कैमरे में एक युवक जानवर का सिर ले जाते हुए दिखाई दिया है। फुटेज में दिख रहा है कि युवक ने अपने चेहरे को रुमाल से ढक रखा था, ताकि उसकी पहचान न हो सके।

पुलिस इस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी युवक की पहचान करने और उसे जल्द से जल्द गिरफ्तार करने के प्रयास कर रही है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि माहौल बिगाड़ने की कोशिश करने वाले शख्स को बख्शा नहीं जाएगा।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने नई दिल्ली में युवा कपड़ा डिजाइनरों के साथ बातचीत की, उद्योग की चुनौतियों और व्यवस्थागत पूर्वाग्रहों पर चर्चा की.

चारधाम यात्रा 2025 : उत्तराखंड सरकार ने पूरी की तैयारियां, सतपाल महाराज ने दिए सख्त निर्देश

देहरादून (आरएनएस)। उत्तराखंड सरकार ने चारधाम यात्रा 2025 की तैयारियां पूरी कर ली हैं। कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज ने बताया कि यात्रा को सुगम और सुरक्षित बनाने के लिए सभी जरूरी इंतजाम किए गए हैं। साथ ही, उन्होंने हेली टिकटों की कालाबाजारी और यात्रा मार्ग पर मनमानी पार्किंग फीस वसूलने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। महाराज ने कहा कि इस बार श्रद्धालुओं के लिए पंजीकरण की प्रक्रिया को और आसान किया गया है। ऑनलाइन और ऑफलाइन पंजीकरण के अलावा मोबाइल ऐप और आधार नंबर के जरिए भी रजिस्ट्रेशन की सुविधा उपलब्ध होगी। हरिद्वार, ऋषिकेश और हरबर्टपुर में ऑफलाइन पंजीकरण केंद्र बनाए गए हैं। इसके अलावा, देहरादून में उत्तराखंड पर्यटन विकास परिषद के मुख्यालय में 24 घंटे चलने वाला स्टेट लेवल कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है, जो यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं की सहायता करेगा। चारधाम यात्रा 30 अप्रैल 2025 से शुरू होगी, जब यमुनोत्री और गंगोत्री धाम के कपाट खुलेंगे। केदारनाथ धाम के कपाट 2 मई, बद्रीनाथ धाम के कपाट 4 मई और हेमकुंड साहिब के कपाट 25 मई को श्रद्धालुओं के लिए खोले जाएंगे।

मदरसे में नाबालिग छात्रा से बार-बार दुष्कर्म, कोर्ट ने मौलवी को सुनाई 187 साल की सजा

कन्नूर (आरएनएस)। केरल की कन्नूर स्थित एक विशेष पॉक्सो अदालत ने मदरसे में तालीम देने वाले एक मौलवी को नाबालिग छात्रा के साथ बार-बार यौन शोषण और दुष्कर्म करने के गंभीर अपराध में कुल 187 साल की कठोर कारावास की सजा सुनाई है। 41 वर्षीय दोषी मौलवी मोहम्मद रफी पर 13 साल की बच्ची का यौन उत्पीड़न करने का आरोप सिद्ध हुआ है। मौलवी इस मामले में पहले से ही जेल में बंद था।

जानकारी के अनुसार, पीड़िता (13 वर्षीय) आरोपी मौलवी के मदरसे में पढ़ने जाती थी। कुछ समय बाद बच्ची के व्यवहार में बदलाव और शारीरिक स्थिति में परिवर्तन देखकर माता-पिता चिंतित हो गए। बच्ची का पढ़ाई में भी मन नहीं लग रहा था। बीबीसी की एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया गया है कि जब माता-पिता बच्ची को काउंसलर के पास ले गए, तो उसने पूरी आपबीती सुनाई। बच्ची ने बताया कि मदरसे में मौलवी ने उसके साथ कई बार दुष्कर्म और अन्य तरह का यौन शोषण किया।

कन्नूर पॉक्सो कोर्ट ने एक चौंकाने वाले मामले में आरोपी मौलवी मोहम्मद रफी को बच्ची के बयान के आधार पर दोषी करार दिया है। बच्ची के खुलासे के बाद उसके खिलाफ पॉक्सो एक्ट और आईपीसी की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया था।

चुनाव चिह्न विवाद : तेजस्वी यादव और मुकेश सहनी की मुश्किलें बढ़ी, कोर्ट ने भेजा नोटिस; पेश होने का आदेश

मुजफ्फरपुर (आरएनएस)। विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) के संरक्षक मुकेश सहनी, राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष सहनी और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव को चुनाव चिह्न के दुरुपयोग से जुड़े मामले में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत से नोटिस जारी किया गया है। कोर्ट ने सभी को 6 मई को स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित होकर अपना पक्ष रखने का निर्देश दिया है। उपस्थिति न होने की स्थिति में कोर्ट एकपक्षीय सुनवाई कर आदेश पारित कर सकता है। पिछले वर्ष 18 अप्रैल को भारती सार्थक पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और अधिवक्ता सुधीर कुमार ओझा ने मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी की अदालत में एक परिवाद दायर किया था। इसमें आरोप लगाया गया था कि वीआईपी नेताओं ने फर्जीवाड़ा और धोखाधड़ी कर नाव चुनाव चिह्न का दुरुपयोग किया। मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी की अदालत ने सुनवाई के बाद परिवाद को खारिज कर दिया था। इसके खिलाफ अधिवक्ता ने प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत में पुनरीक्षण याचिका (रिविजन वाद) दायर की,

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ए.डी. ब्लॉक, शालीमार बाग, नई दिल्ली में हनुमान जयंती के अवसर पर मंदिर में दर्शन करती हुई।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने नई दिल्ली स्थित दिल्ली भाजपा कार्यालय में हनुमान जयंती के अवसर पर प्रसाद वितरित किया।

इंडिगो फ्लाइट में भारी टर्बुलेंस, आधे घंटे हवा में हिचकोले खाता रहा विमान, यात्रियों की अटकी सांसें

रांची (आरएनएस)। दिल्ली से रांची आ रही इंडिगो की फ्लाइट (6 श्व 5298) गुरुवार को भयानक टर्बुलेंस (हवा में कंपन) का शिकार हो गई। खराब मौसम के कारण विमान करीब 30 मिनट तक हवा में बुरी तरह हिचकोले खाता रहा, जिससे यात्रियों की जान हलक में आ गई। विमान के अंदर चीख-पुकार मच गई, हालांकि पायलट की सूझबूझ से विमान को सुरक्षित लैंड करा लिया गया।

यात्री ने बयां किया खौफनाक मंजर

विमान में यात्रा कर रहे यात्री सत्य प्रकाश ने इस खौफनाक अनुभव को साझा करते हुए बताया कि इंडिगो के विमान ने गुरुवार दोपहर 1ः20 बजे दिल्ली एयरपोर्ट से रांची के लिए उड़ान भरी थी। जब विमान दिल्ली से लगभग 350 किलोमीटर दूर था, तभी दोपहर करीब 2ः20 बजे, 40 हजार फीट की ऊंचाई पर अचानक विमान बुरी तरह लड़खड़ाने लगा। उन्होंने बताया, विमान के अंदर से बाहर कुछ भी साफ नजर नहीं आ रहा था, विजिबिलिटी बिल्कुल शून्य हो गई थी। विमान को इस तरह डगमगाता देख सभी यात्री बुरी तरह डर गए। मेरे लिए यह पहला ऐसा अनुभव था, इसलिए मैं और भी ज्यादा भयभीत था। कई यात्रियों की हालत ऐसी थी मानो यह उनके जीवन का अंतिम दिन हो। चीखने लगे थे यात्री और क्रू मेंबर सत्य प्रकाश के अनुसार, दोपहर लगभग 2ः45 बजे स्थिति और भी भयावह हो गई जब डर के मारे विमान के अंदर बैठे यात्री और क्रू मेंबर भी चिल्लाने लगे।

इस बेहद मुश्किल और डरावनी परिस्थिति के बीच, विमान की एक क्रू मेंबर तान्या ने हिम्मत दिखाई। वह घबराए हुए यात्रियों के पास गईं और सभी का हौसला बढ़ाया। उन्होंने यात्रियों से कहा, डरने की जरूरत नहीं है। हमने इससे भी खराब मौसम में विमान की सुरक्षित लैंडिंग कराई है। आप सभी शांति बनाए रखें। हम सभी को मिलकर इस विषम परिस्थिति का सामना करना होगा। करीब आधे घंटे तक हवा में हिचकोले खाने और अनिश्चितता के बाद, पायलट ने अपनी कुशलता और सूझबूझ का परिचय देते हुए दोपहर 3ः38 बजे विमान को रांची के बिरसा मुंडा एयरपोर्ट पर सुरक्षित उतार दिया। विमान के सकुशल जमीन पर उतरने के बाद ही यात्रियों ने राहत की सांस ली। यात्री सत्य प्रकाश ने बताया कि सुरक्षित लैंडिंग के बाद पायलट ने जानकारी दी कि मौसम अत्यधिक खराब होने और विजिबिलिटी शून्य हो जाने के कारण विमान को संभालने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ा।

गदर 2 के साथ कई बॉक्स ऑफिस रिकॉर्ड तोड़ने के बाद, सनी देओल जाट के साथ बड़े पर्दे पर लौट आए हैं। गोपीचंद मालिनेनी द्वारा निर्देशित इस फिल्म का निर्माण मैथरी मूवी मेकर्स द्वारा किया गया है, जो पुष्पा फ्रैंचाइज़ी के पीछे का बैनर है। अपने रिलीज़ के दिन 9.5 करोड़ रुपये से ओपनिंग करने के बाद, जाट ने पूरे भारत में अपने कलेक्शन और थिएटर काउंट दोनों में गिरावट देखी। इंडस्ट्री ट्रैकर, सैकनिल्क द्वारा पोस्ट किए गए शुरुआती अनुमानों के अनुसार, फिल्म ने दूसरे दिन भारत में 7 करोड़ रुपये कमाए।

देश में अशिक्षा है सबसे बड़ा सामाजिक मुद्दा : संजना सांघी

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) की यूथ चैंपियन अभिनेत्री संजना सांघी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया। अभिनेत्री का मानना है कि अशिक्षा ही हमारे देश में सबसे बड़ा सामाजिक मुद्दा है।

उन्होंने अपने अंतरराष्ट्रीय काम के अनुभव पर भी बात की। संजना ने बताया कि उन्हें किस बात ने प्रेरित किया। सांघी ने कहा, मुझे याद है कि मैंने एम्मा वाटसन को यूएन में बोलते हुए देखा था और मेरे पर वहीं से प्रभाव पड़ा। बच्चों को पढ़ाने से मुझे उनसे जुड़ाव का एहसास हुआ। आखिरकार, मैंने वॉलंटियर्स को सलाह देना शुरू कर दिया और उस पहल को आगे बढ़ाया। मेरा सपना एक ऐसे संगठन के निर्माण करने का है, जहां हमारे देश में कोई भी अशिक्षित न हो, मुझे लगता है कि शिक्षा की कमी हमारे देश में सबसे बड़ा सामाजिक मुद्दा है।

सांघी का मानना है कि शिक्षा से जेंडर और वेतन असमानता तथा स्वास्थ्य जागरूकता की कमी जैसे कई मुद्दों का समाधान हो सकता है।

संजना ने आगे कहा, शिक्षा की कमी हमारे सामने आने वाले बड़े मुद्दों की जड़ है। इसे हल करें और आप लिंग और वेतन असमानता, मासिक धर्म स्वास्थ्य जागरूकता, महिला अधिकार

जैसे विषयों पर खुलकर बात कर सकेंगे। दुर्भाग्य से लॉकडाउन में अध्ययनों से पता चलता है कि 10 मिलियन लड़कियों को स्कूल छोड़ने और घर में रहने के लिए मजबूर किया गया। वहीं, लड़कों की संख्या एक मिलियन से कम थी।

शुरुआती सफलता और चुनौतियों से निपटने के बारे में उन्होंने बताया, ओम का बॉक्स ऑफिस पर सकारात्मक प्रदर्शन न करने से मुझे एहसास हुआ कि प्रक्रिया ही पुरस्कार है।

उन्होंने आगे बताया, मुझे याद है कि मैंने शुक्रवार को रिलीज के जश्न के लिए अपने सभी दोस्तों को बुलाया था, क्योंकि यह एक ऐसी यात्रा थी, जिसका मैंने बहुत आनंद लिया और यह मेरे लिए एक अनुभव के रूप में एक मजेदार यात्रा थी।

ज्वेल थीफ का पहला गाना जादू जारी, रोमांस करते नजर आए सैफ अली खान

सैफ अली खान जल्द ही ज्वेल थीफ फिल्म से नेटफ्लिक्स पर लौट रहे हैं। इस बार वह इस फिल्म में एक लुटेरा बन कर आ रहे हैं। ज्वेल थीफ का निर्देशन कूकी गुलाटी और रॉबी ग्रेवाल ने किया है। फैंस इस फिल्म की रिलीज का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। फिल्म का पहला लुक फरवरी में जारी किया गया था। नेटफ्लिक्स ने समय-समय पर फिल्म के बारे में अपडेट दी हैं, ताकि इस पर चर्चा होती रहे। अब फिल्म निर्माताओं ने फिल्म का नया गाना जारी किया है। फिल्म निर्माताओं ने फिल्म के गाने के रिलीज के बारे में कल ही बताया था। इसके बाद आज ज्वेल थीफ का गाना जादू रिलीज हुआ है। गाने को यूट्यूब पर देखा जा सकता है। गाने में सैफ अली खान, जयदीप अहलावत, कुणाल कपूर और निकिता दत्ता हैं। ००

नुसरत भरुचा का बोल्ड अवतार, हॉटनेस से बढ़ाया तापमान

बॉलीवुड एक्ट्रेस नुसरत भरूचा अपने बोल्ड और स्टाइलिश लुक के लिए जानी जाती हैं. हाल ही में उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर कुछ ग्लैमरस तस्वीरें शेयर की हैं, जिसमें वह बेहद हॉट और स्टनिंग नजर आ रही हैं. नुसरत ने वाइट डीप-नेक टॉप और ब्लैक ग्लिटरी स्कर्ट पहनी है, जिसमें उनका लुक बेहद ग्लैमरस लग रहा है. उन्होंने अपने लुक को सिल्वर ज्वेलरी और न्यूड मेकअप से कम्प्लीट किया है. उनके स्टाइलिश हेयरडू और एक्सप्रेशन्स ने फैंस का दिल जीत लिया है.

इन तस्वीरों के सामने आते ही सोशल मीडिया पर हलचल मच गई है. फैंस नुसरत के इस लुक की जमकर तारीफ कर रहे हैं. कोई उन्हें फायर बता रहा है तो कोई गॉर्जियस कह रहा है. एक यूजर ने लिखा, आपकी हॉटनेस ने इंटरनेट पर आग लगा दी! वर्कफ्रंट की बात करें तो नुसरत भरूचा जल्द ही कई दिलचस्प प्रोजेक्ट्स में नजर आएंगी. उनके फैन्स उनकी अपकमिंग फिल्मों को लेकर बेहद एक्साइटेड हैं.

मुनव्वर फारूकी की फर्स्ट कॉपी का टीजर जारी, अमेजन एमएक्स प्लेयर पर होगा प्रीमियर

मशहूर स्टैंडअप कॉमेडियन और बिग बॉस 17 के विजेता मुनव्वर फारूकी काफी समय से अपनी

वेब सीरीज फर्स्ट कॉपी को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं।खास बात यह है कि यह मुनव्वर के करियर की पहली सीरीज है, जिसकी दर्शक लंबे समय से राह देख रहे हैं। अब निर्माताओं ने फर्स्ट कॉपी का टीजर जारी कर दिया है, जिसे प्रशंसक खूब पंसद कर रहे हैं। मुनव्वर की अदाकारी की भी लोग काफी तारीफ कर रहे हैं।

गौरव खन्ना ने उठाई ट्रॉफी, जीते 20 लाख रुपये नकद, निक्की तंबोली बनीं फर्स्ट रनर अप

अनुपमा अभिनेता गौरव खन्ना को भारत के पहले सेलिब्रिटी मास्टरशेफ का विजेता घोषित किया गया है। टीवी अभिनेता को 20 लाख रुपये नकद पुरस्कार और कई रसोई उपकरण दिए गए। बिग बॉस 14 की प्रतियोगी निक्की तंबोली फर्स्ट रनर-अप बनीं। उनके साथ राजीव अदातिया और फैजू फाइनलिस्ट थे, जबकि तेजस्वी प्रकाश बाहर होने वाली पहली महिला थीं। इस साल 27 जनवरी को प्रसारित होने वाले कुकिंग टीवी रियलिटी शो को 11 अप्रैल, 2025 को अपना विजेता मिल गया। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सेलिब्रिटी मास्टरशेफ का अंतिम एपिसोड दो भागों में विभाजित है। आज रात के एपिसोड में, शीर्ष पांच फाइनलिस्ट के माता-पिता प्रतियोगियों का समर्थन करने के लिए शो में आए। इस बीच, तेजस्वी प्रकाश को उनके बॉयफ्रेंड और टीवी एक्टर करण कुंद्रा से भी सरप्राइज मिला, क्योंकि उन्होंने फाइनल राउंड में उनके लिए एक लकी पांडा जैकेट खरीदी। लोकप्रिय रियलिटी टीवी सीरीज सोनी लिव के निर्माताओं ने सोशल मीडिया पर सेलिब्रिटी मास्टरशेफ सीजन 1 के अंतिम एपिसोड की झलकियां पहले ही साझा कर दी थीं।

शुक्रवार के फिनाले एपिसोड के दौरान गौरव ने ट्रॉफी उठाई और इसे एक अवास्तविक एहसास बताया। गौरव खन्ना ने अपनी बड़ी जीत पर खुशी जताते हुए कहा, सेलिब्रिटी मास्टरशेफ जीतना बिल्कुल अवास्तविक लगता है। इस शो ने मुझे पूरी तरह से मेरे कम्फर्ट जोन से बाहर निकाल दिया। सेलिब्रिटी मास्टरशेफ का हिस्सा बनना एक बहुत बड़ा सम्मान है, खासकर मिशेलिन-स्टार वाले जीनियस शेफ विकास खन्ना और अपने हुनर ??के सच्चे उस्ताद शेफ रणवीर बरार जैसे दिग्गजों के साथ खड़े होना - दोनों ने हमें बहुत ही शालीनता से मार्गदर्शन और चुनौती दी। और निश्चित रूप से, हमेशा प्रेरणा देने वाली फराह खान, जिनकी ऊर्जा और प्रोत्साहन ने हमें आगे बढ़ाया। उनके सामने खाना बनाना बहुत मुश्किल था - हर एक दिन एक नई चुनौती लेकर आता था जिसने मुझे और गहराई से सोचने और अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए प्रेरित किया।

बॉक्स ऑफिस पर सलमान खान की सिकंदर का हाल-बेहाल, 10वें दिन कमाए केवल इतने करोड़ रुपये

ईद के मौके पर आई सलमान खान की फिल्म सिकंदर बॉक्स ऑफिस पर मुंह के बल गिरी है। न तो दर्शकों ने फिल्म को सराहा और न ही समीक्षकों से इसे हरी झंडी मिली, जिसके चलते पहले दिन से ही यह टिकट खिड़की पर दर्शकों के लिए संघर्ष करती दिख रही है।

बॉक्स ऑफिस पर फिल्म का हाल-बेहाल है। हर गुजरते दिन के साथ इसकी कमाई में गिरावट जारी है। आइए जानें सिकंदर ने 10वें दिन कितने करोड़ रुपये कमाए। बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, सिकंदर ने अपनी रिलीज के 10वें दिन यानी दूसरे मंगलवार को 1.35 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जिसके बाद इसका कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 105.60 करोड़ रुपये हो गया है।

दुनियाभर में सिकंदर ने 200 करोड़ रुपये की कमाई का आंकड़ा पार कर लिया है। इस फिल्म ने अब तक दुनियाभर में 200.93 करोड़ रुपये कमा लिए हैं। फिल्म का अनुमानित बजट लगभग 200 करोड़ रुपये बताया जा रहा है। सिकंदर के निर्देशन की कमान एआर मुरुगदॉस ने संभाली है, जिन्होंने ब्लॉकबस्टर फिल्म गजनी बनाई थी। साजिद नाडियाडवाला फिल्म के निर्माता हैं। इस फिल्म में सलमान की जोड़ी पहली बार रश्मिका मंदाना के साथ बनी है। फिल्म में प्रतीक बब्बर, काजल अग्रवाल, सत्यराज और शरमन जोशी सहित कई कलाकार सहायक भूमिका में नजर आ रहे हैं।

सिकंदर की कहानी एक ऐसे इंसान की है, जो भ्रष्ट सिस्टम से परेशान हो चुका है और अब इसके खिलाफ आवाज उठा रहा है।

रजनीकांत की पैन-इंडिया एक्शन फिल्म कुली की रिलीज डेट तय, निर्माताओं ने पोस्टर जारी कर शेयर की जानकारी

रजीकांत इन दिनों अपनी आगामी फिल्म कुली को लेकर लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। रजनीकांत के फैंस को उनकी फिल्म कुली की रिलीज का बेसब्री से इंतजार है। आज निर्देशक लोकेश कनगराज ने सोशल मीडिया पर फिल्म कुली की रिलीज की आधिकारिक घोषणा कर फैंस को खुश कर दिया है।

फिल्म कुली का निर्देशन लोकेश कनगराज ने किया है। लोकेश कनगराज ने अपने इंस्टाग्राम पर रजनीकांत का ब्लैक एंड व्हाइट पोस्टर में एक पोस्टर शेयर किया है, जिसमें रजनीकांत सीटी बजाते दिख रहे हैं। और साथ ही कैप्शन में लिखा, देवा आ रहा है, कुली 14 अगस्त से दुनिया भर में।

एक्शन ड्रामा फिल्म कुली के निर्माताओं ने रिलीज की तारीख बताकर फैंस को खुश कर दिया है। यह फिल्म लोकेश कनगराज के निर्देशन में बनी है। कुली 14 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के मौके पर दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी। सन पिक्चर्स ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर भी इसकी रिलीज की जानकारी दी है। एक्स पर लिखा, देवा आ रहा है।

केसरी 2 से अक्षय कुमार का नया लुक आया सामने, पहले नहीं देखा होगा ऐसा अवतार

अभिनेता अक्षय कुमार जल्द ही फिल्म केसरी: चैप्टर 2 में नजर आएंगे। यह फिल्म इस साल की बहुचर्चित फिल्मों में से एक है। इस फिल्म की कहानी जलियांवाला बाग हत्याकांड पर आधारित है। अक्षय फिल्म में वरिष्ठ वकील सी शंकरन नायक की भूमिका निभा रहे हैं।

अब केसरी: चैप्टर 2 से अक्षय का नया लुक सामने आ गया है, जिसे प्रशंसक खूब पसंद कर रहे हैं। अभिनेता का ऐसा अवतार आपने पहले कभी नहीं देखा होगा।

अक्षय ने लिखा, यह कोई पोशाक नहीं है। यह प्रतीक है- परंपरा का, प्रतिरोध का, सत्य का, मेरे राष्ट्र का। सी शंकरन नायर ने हथियार से लड़ाई नहीं की। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य से कानून से लड़ाई लड़ी। हम आपके लिए वह अदालती मुकदमा लेकर आ रहे हैं, जो आपने कभी पाठ्यपुस्तकों में नहीं पढ़ा।

केसरी 2 को 18 अप्रैल, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा।

गर्मियों के दौरान पपीता खरीदते समय इन 5 बातों का रखें ध्यान, होगा सही चयन

गर्मियों के दौरान पपीते का सेवन करना फायदेमंद होता है क्योंकि यह एक समर सुपरफूड है। इसमें विटामिन-ए, विटामिन-सी, पोटेशियम, फोलेट, मैग्नीशियम, फाइबर और एंटी-ऑक्सीडेंट्स जैसे कई जरूरी तत्व होते हैं।

ये तत्व शरीर को हाइड्रेट रखने और पाचन को सही रखने में मदद करते हैं। इसके लिए सही पपीता चुनना जरूरी है ताकि आप इसके फायदों का पूरा लाभ उठा सकें।

आइए पपीता खरीदने के सही तरीके जानते हैं।

पपीते की त्वचा पर दें ध्यान

पपीते की त्वचा पर ध्यान देना जरूरी है क्योंकि इससे आपको पपीते के स्वाद का अंदाजा हो सकता है।

अगर पपीते की त्वचा पर हरे रंग की छाया होती है तो समझ जाइए कि यह कच्चा है और इसे खाने से मीठा नहीं लगेगा।

दूसरी ओर अगर पपीते की त्वचा पर पीले रंग की छाया होती है तो इसका मतलब है कि यह पक गया है और यह खाने में मीठा और नरम होगा।

आकार पर न दें ध्यान

अगर आप आकार के आधार पर पपीते को चुनते हैं तो यह सही नहीं है।

दरअसल, कई लोग बड़े आकार के पपीते को चुनते हैं क्योंकि उनका मानना है कि ऐसे पपीते में अधिक मात्रा में पोषक तत्व होते हैं, जबकि ऐसा कुछ नहीं है। आकार से ज्यादा पपीते की गुणवत्ता मायने रखती है। ऐसे में बेहतर होगा कि आप आकार की बजाय पपीते की गुणवत्ता पर ध्यान दें और उसे ही खरीदें।

सुगंध का करें पता

पपीते की सुगंध से भी इसकी पक्की जानकारी मिल सकती है।

अगर पपीते से मीठी और सुगंधित सुगंध आ रही है तो समझ जाइए कि यह पका हुआ है और इसे खरीद लेना चाहिए।

दूसरी ओर अगर पपीते से कोई सुगंध नहीं आ रही है तो इसका मतलब है कि यह कच्चा है और इसे खरीदने से बचना चाहिए। ऐ से पके पपीते खाने में मीठा और नरम होता है, जबकि कच्चे पपीते का स्वाद खट्टा होता है।

दाग-धब्बों पर दें ध्यान

पपीते पर दाग-धब्बे होने से भी इसके स्वाद पर असर पड़ सकता है। अगर पपीते पर हल्के दाग-धब्बे हैं तो उसे खाया जा सकता है, लेकिन अगर दाग-धब्बे गहरे और काले रंग के हैं तो ऐसे पपीते को खरीदने से बचना चाहिए क्योंकि इसका स्वाद कड़वा हो सकता है। इसलिए जब भी आप बाजार से पपीता खरीदने जाएं तो इस बात का खास ख्याल रखें।

बीजों पर दें ध्यान पपीते के बीज भी आपको इसके स्वाद के बारे में बता सकते हैं।

अगर पपीते के बीज सफेद होते हैं तो इसका मतलब है कि यह पक गया है और इसे खरीद लेना चाहिए।

दूसरी ओर अगर पपीते के बीज काले होते हैं तो समझ जाइए कि यह कच्चा है और इसे खरीदने से बचें।

अपने नाखूनों को स्वस्थ और सुंदर बनाना चाहते हैं? आजमाएं ये 5 घरेलू नुस्खे

नाखूनों की देखभाल करना उतना ही जरूरी है, जितना कि चेहरे और बालों की। सुंदर और स्वस्थ नाखून आपके व्यक्तित्व को निखारते हैं।

इस लेख में हम आपको कुछ आसान और प्रभावी घरेलू नुस्खे बताएंगे, जिनसे आपके नाखून मजबूत, चमकदार और आकर्षक बन सकते हैं।

इन उपायों को अपनाकर आप अपने नाखूनों की प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ा सकते हैं और उन्हें टूटने-छिलने से बचा सकते हैं।

आइए जानते हैं कैसे।

जैतून के तेल का करें उपयोग

जैतून का तेल नाखूनों को पोषण देता है और उन्हें मजबूत बनाता है। रोजाना सोने से पहले अपने नाखूनों पर जैतून का तेल लगाएं और हल्के हाथों से मालिश करें। इससे आपके नाखून नमी बनाए रखते हैं और टूटने-छिलने की संभावना कम हो जाती है। इसके अलावा यह नाखूनों को चमकदार भी बनाता है। जैतून के तेल में मौजूद विटामिन और फैटी एसिड नाखूनों को मजबूत करने में मदद करते हैं।

लहसुन का करें इस्तेमाल

लहसुन का इस्तेमाल नाखूनों की मजबूती बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। लहसुन में सल्फर जैसे तत्व होते हैं, जो नाखूनों को मजबूत बनाते हैं।

लाभ के लिए एक-दो कली लहसुन को पीसकर उसमें थोड़ा जैतून का तेल मिलाएं और इसे अपने नाखूनों पर लगाएं। 10-15 मिनट बाद हाथ धो लें। इससे आपके नाखून मजबूत होंगे और उनकी चमक भी बढ़ेगी।

इस उपाय को नियमित रूप से अपनाने से आपके नाखूनों की सेहत में सुधार होगा।

नींबू का रस भी है फायदेमंद नींबू का रस नाखूनों की सफेदी बढ़ाने और उन्हें चमकदार बनाने में मदद करता है। एक कप गुनगुने पानी में नींबू के रस की कुछ बूंदें मिलाकर उसमें अपने हाथों को थोड़ी देर डुबोएं। इसके बाद अपने हाथों को साफ पानी से धो लें। नींबू में मौजूद विटामिन-सी आपके नाखूनों को पोषण देता है और उन्हें स्वस्थ बनाए रखता है। इस उपाय को हफ्ते में एक बार जरूर अपनाएं ताकि आपके नाखून हमेशा साफ-सुथरे और आकर्षक दिखें। नारियल तेल से मिलेगी सुरक्षा

नारियल तेल आपके नाखूनों को टूटने-छिलने से बचाता है और उन्हें नमी प्रदान करता है। रोजाना नहाने के बाद अपने नाखूनों पर नारियल तेल लगाएं और हल्के हाथों से मालिश करें। इससे आपके नाखून मजबूत होंगे और उनकी प्राकृतिक नमी बनी रहेगी।

इसके अलावा नारियल तेल में मौजूद विटामिन और फैटी एसिड आपके नाखूनों को पोषण देते हैं।

इस उपाय को नियमित रूप से अपनाने से आपके नाखून हमेशा स्वस्थ और आकर्षक दिखेंगे।

बायोटिन सप्लीमेंट्स लें बायोटिन एक विटामिन है, जो आपके नाखूनों की सेहत के लिए बहुत जरूरी होता है। अगर आपके खाने में बायोटिन की कमी होती है तो आपके नाखून कमजोर हो सकते हैं। इसलिए बायोटिन सप्लीमेंट्स लेना फायदेमंद हो सकता है।

शब्द सामर्थ्य -014

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. जल छिड़कना, राजा के सिंहासन रोहन का अनुष्ठान 4. मवाद, पीव (अं) 6. जाति 7. हाथ से धीरे-धीरे टोंकना, थपकना 9. कमल रोग से ग्रसित व्यक्ति (उ.) 11. किरण 12. छौंक, तड़का 13. दुखदायी, दर्दनाक 15. विवाद, कहासुनी, तकरार 18. समूह, दल, समुदाय 19. दण्ड 20. काजल 22. अनाथ, निराश्रित, यतीम 24. दुख, शोक 25. एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, बक 26. राज्य का विदेश में प्रतिनिधि।

ऊपर से नीचे

1. विचित्र, अद्भुत 2. अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना 3. वचन, वाणी 4. गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो 5. मुलायम सिंह की पार्टी का संक्षिप्त नाम 8. ब्रह्मापुत्र एक प्रसिद्ध देवर्षि 10. कार्यावली, करस्तानी, प्रशंसनीय कार्य 13. दासी, नौकरानी, बांदी, गुलाम स्त्री 14. प्रवृत्त करने वाला, प्रेरित करने वाला, आविष्कारक 16. श्रीकृष्ण के बड़े भाई, हलधर 17. सामान (उ.) 21. संसार, दुनिया 22. समय, चमेली की जाति का एक पौधा और फूल 23. पराजित, परास्त।

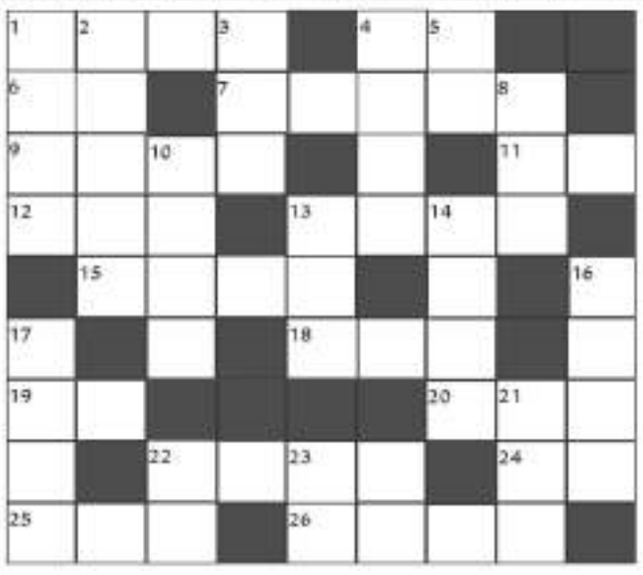

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 013 का हल

दि	क्क	त	■	आ	सा	न	■	आ
ल	■	मी	■	खि	■	सी	ख	ना
■	म	ज	बू	र	■	ह	■	जा
स	र्द	■	■	का	■	त	रा	ना
र	■	■	■	र	वि	■	ह	■
प	ह	ना	ना	■	ना	रा	ज	■
ट	■	■	क	शि	श	■	नी	ला
■	र	■	■	का	■	रा	■	य
खा	ति	र	दा	री	■	त	क्ष	क

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि) थाना मझगवॉ में सुबह ग्राम धनगवॉ में एक महिला द्वारा जहरीली वस्तु का सेवन करने से मृत्यु होने की सूचना पर ग्राम धनगवॉ पहुंची पुलिस को राजभान गौतम उम्र 48 वर्ष निवासी ग्राम धनगवॉ ने बताया कि वह खेती किसानी करता है उसके 2 बच्चे हैं उसकी पत्नि संगीता का शादी के पूर्व से मानसिक संतुलन ठीक नहीं था, ससुरल वाले व उसके द्वारा पत्नि का जबलपुर में इलाज चल रहा था , कभी कभी घर से चली जाती थी तथा किसी के भी साथ मारपीट कर देती थी,

राष्ट्रोत्सर्ग हेतु हुआ खालसा पंथ का सृजन

धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाया गया वैसाखी महापर्व

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। सिख धर्म के दसवें गुरु गोबिंद सिंह साहिब ने 1699 में राष्ट्रोत्सर्ग और भारतीय समाज को एकजुट करने हेतु खालसा पंथ का सृजन किया, ताकि आतताइ और मुगल आक्रांताओं से देश और भारतीय संस्कृति की रक्षा की जा सके। इसलिए गुरुजी ने वीर खालसा को वीरोचित सैन्य पोशाक और पंच ककार के साथ ही शस्त्र भी धारण करवाए। परिणाम स्वरूप सिखों ने खालसा के नेतृत्व में दो बार दिल्ली फतह की और दुश्मन को कड़ी टक्कर देकर भारतवासियों के सोए हुए स्वाभिमान को जगाने का अद्भुत और ऐतिहासिक कारनामा कर दिखाया । तदाशय के प्रेरणास्पद उद्गार आज प्रसिद्ध इतिहासविद और गुरुवाणी मीमांसक ज्ञानी हरमीत सिंह जम्मू, कश्मीर ने वैसाखी महापर्व पर व्यक्त किये। उन्होंने आगे कहा कि मुगलकाल से लेकर अंग्रेजों तक खालसा ने बेशुमार कुर्बानियां देकर देश धर्म और संस्कृति की निरंतर रक्षा की। खालसा पंथ का सृजन दिवस और फसलों की कटाई उपरान्त मनाया जाने वाला वैसाखी महापर्व की आज देशभर में धूम रही । संस्कारधानी जबलपुर में गुरुद्वारा प्रेमनगर, मदनमहल और गुरुद्वारा जी सी एफ में धूमधाम से बैसाखी महापर्व मनाया गया । दोनों ही आयोजनों में श्री दरबार साहिब अमृतसर, पंजाब के विख्यात हुजूरी रागी जत्था भाई जगतार सिंह, ढाड्डी जत्था भाई

ब्रिछपालसिंह, बरकंडी वाले, इतिहासविद ज्ञानी हरमीत सिंह,जम्मू, भाई प्रगट सिंह, हरजीत सिंह अखंड कीर्तनी जत्था, ग्रंथ साहिब भवन एवं स्त्री सत्संग सभा प्रेमनगर सहित अनेक विद्वतजनो ने गुरुवाणी शबद कीर्तन एवं विरोचित ढाड्डी, वारों और गीतों से युद्ध के जीवंत नजारे पेश किए। इस मौके पर कैबिनेट मंत्री श्री राकेश सिंह, सांसद आशीष दुबे, पूर्व मंत्री हरेंद्र जीत सिंह बब्बू, महापौर जगत बहादुर अन्नू, अजीत सिंह नैय्यर सीटू, कुंवरपाल सिंह शेरू, काके आनन्द पार्षद श्रीमती राठौर, नरेंद्र सिंह पांधे ,आदि जन प्रतिनिधियों के साथ ही हर वर्ग और धर्म के तकरीबन 25 हजार श्रद्धालुओं ने गुरुघर में माथा टेककर एक ही पंगत में गुरु का लंगर ग्रहण कर राष्ट्रीय एकता की अवधारणा की और भी मजबूत किया ।पंथिक पंज प्यारों ने अभिलाषियों को परम्परागत खंडे और बाटे का अमृत पान भी करवाया और सिख नारी मंच के नेतृत्व में रक्तादान शिविर लगाया गया जिसमें 041यूनिट रक्त एकत्रित हुआ । विभिन्न संस्थाओं द्वारा लस्सी और शरबत, छबील एवं आइसक्रीम आदि के स्टाल लगाकर तपती दोपहरी में भी निस्वार्थ सेवा की गई। पंगत में गुरु का लंगर दिनभर वितरित किया गया । विभिन्न सेवादारों और जनप्रतिनिधियों को सिरोपा प्रदान कर सम्मानित किया गया प्रधान साहब मंजीत सिंह ननडा, चरणजीत सिंह कैला, सुरिंदर सिंह होरा, हरमीत सिंह धन्जल, बलजीत सिंह मांगट, अवतार सिंह पलाहा, अजायब सिंह कैंबो, हरजोत सिंह बॉबी,प्रबंधक कमेटी, विविध सेवादारों एवं साध संगत का विशेष सहयोग एवं उपस्थिति रही ।

गुरुद्वारा जी सी एफ में प्रसिद्ध रागी जत्था भाई जगतार सिंह, अमृतसर ने शास्त्रीय सुरों में ढालकर सम सामयिक गुरुवाणी शबद पीवो पाहुल खंडे धार, होए जन्म सुहेला के साथ वैसाखी महापर्व की शानदार शुरुआत की और साध संगत को लख लख बधाइयां संप्रेषित की । पश्चात स्थानीय रागी जत्थे और शालेय छात्रों,छात्राओं ने बधाई गीत पेश किए । कार्यक्रम का संचालन परमदीप सिंह मैनी एवं प्रधान महेंद्र सिंह नागी ने आभार व्यक्त किया। बताया गया कि आजादी से पूर्व सन 1941से ही यहां वैसाखी महापर्व धूमधाम से मनाया जा रहा है। यहां आज कीर्तन दरबार और गुरु का लंगर पंगत में वितरित किया गया। साथ ही सभा द्वारा ओ आई सी जी सी एफ श्री राजीव गुप्ता, श्री राहुल चौधरी जी एम, ब्रिगेडियर समीर सिंह एवं कर्नल जी एस साई कुमार तथा गणमान्य समाज सेवियों को सम्मानित भी किया गया। अंतविश्व शांति और सरबत के भले की विशेष अरदास प्रार्थना के बाद कड़ाह प्रसाद वितरन के साथ वैसाखी महापर्व का सोल्लास समापन हुआ। वैसाखी पर गुरुद्वारों को आकर्षक विद्युत सज्जा से रोशन किया गया है। नगर के विभिन्न हिस्सों में फल एवं मिष्ठान का वितरण भी किया गया।

चिनाब पुल के साथ कश्मीर की यात्रा को नई ऊँचाई

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। जहां बर्फ से ढके पहाड़ आसमान को छूते हैं और चिनाब नदी धरती को गहराई तक काटती है, वहीं भारत ने इस कठिन भूभाग में अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति को इस्पात में ढाल दिया है। चिनाब पुल — अब विश्व का सबसे ऊँचा रेलवे पुल — नदी तल से 359 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, जो भारतीय इंजीनियरिंग कौशल और राष्ट्रीय संकल्प का प्रतीक बन चुका है।

यह पुल उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक (स्क्क्रः) परियोजना का हिस्सा है, जो न केवल भौगोलिक दूरी, बल्कि उम्मीदों को भी जोड़ता है — कश्मीर घाटी को पूरे भारत से जोड़ता एक हर मौसम में चलने वाला, विश्वसनीय रेल मार्ग।

सलाल डैम के निकट चिनाब नदी पर बना यह पुल कुल 1,315 मीटर लंबा है, जिसमें 467 मीटर का मुख्य आर्च स्पैन है। यह 266 किमी/घंटा तक की हवा की रफ्तार को झेलने में सक्षम है। ऊंचाई में यह पुल एफिल टॉवर से भी ऊँचा है और नदी तल से रेल पथ तक की ऊंचाई कुतुब मीनार से लगभग पाँच गुना अधिक है।

इस अद्भुत संरचना के निर्माण में 28,000 मीट्रिक टन इस्पात का प्रयोग हुआ और भारतीय रेलवे ने पहली बार केबल क्रेन प्रणाली का उपयोग किया — दो विशाल केबल कार और 100 मीटर से अधिक ऊंचे पाइलन के जरिए, 915 मीटर चौड़ी घाटी को पार करते हुए निर्माण सामग्री को पहुंचाया गया।

हिमालय की भूगर्भीय दृष्टि से जटिल और अस्थिर धरातल पर बना यह पुल केवल एक ढांचागत उपलब्धि नहीं, बल्कि यह भारत की हिम्मत, नवाचार और दूर-दराज क्षेत्रों तक विकास पहुंचाने की अटल प्रतिबद्धता का प्रतीक है। जैसे ही यह पुल चिनाब पर गर्व से खड़ा है, यह केवल दो पहाड़ों को नहीं जोड़ता — यह सपनों, विकास और जम्मू-कश्मीर के नए युग को जोड़ता है।

सिविल अस्पताल राँझी को वाटर कूलर प्रदान

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। सिविल अस्पताल रांझी को विधायक श्री अशोक रोहाणी की अध्यक्षता में आज शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में लॉज नर्मदा जबलपुर संस्था की ओर से वाटर कूलर प्रदान किया गया। इस अवसर पर बताया गया कि सिविल अस्पताल रांझी की वेबसाईट भी इसी संस्था द्वारा बनवाई गई है। कार्यक्रम में लॉज नर्मदा जबलपुर संस्था के गुठा कृष्णन सेल्वराजन, सुभाष एल सराफ, श्री गुलाटी, श्री रूंगटा, श्री छाबड़ा, श्री रूपराह, डॉ बी एस कोहली, पार्षद दामोदर सोनी, सिविल अस्पताल राँझी के प्रभारी अधिकारी डॉ कमलेश धुर्वे, डॉ संजय छत्तानी, डॉ जितेन्द्र मिश्रा, डॉ प्रियंक एवं अस्पताल के स्टाफ की उपस्थिति रही।

जन्मदिवस पर विशेष

जिनके बिना कोर्ट रूम ही नहीं संस्कारधानी भी सूनी है -महाधिवक्ता स्व.श्री राजेंद्र तिवारी

आकर्षक सादगीपूर्ण
किंतु प्रभावशाली गरिमामय
व्यक्तित्व, स्पष्ट वक्ता,बुलंद
दमदार आत्मविश्वास से भरी
ओजस्व वाणी के धनी विधिवेत्ता
स्व.श्री राजेन्द्र तिवारी ,पूर्व
महाधिवक्ता मध्यप्रदेश उच्च
न्यायालय को कौन नहीं जानता?
इसे सुसंयोग ही कहा जा सकता
है कि संस्कारधानी के सुसंस्कारित
,सुविख्यात विधि
पुत्र का जन्म भी संविधान के
प्रणेता डॉ. भीमराव अंबेडकर
के जन्म दिवस के दिन ही हुआ।
14 अप्रैल 1936 जन्म श्री राजेंद्र
तिवारी जी की जन्मे एवं कर्मभूमि
जबलपुर ही रही। कुशाग्र बुद्धि वाले
तिवारी जी विद्यालयीन, महाविद्यालयीन एवं
विश्वविद्यालयीन
शिक्षाक में सदैव अग्रणी रहे। उन्होंने
संस्कृत साहित्य में एम.ए किया
और फिर विधि की पढ़ाई पूर्ण की।
उनकीसक्रियता का ही
परिणाम था कि वे 1956-57 में रानी
दुर्गावती वि.वि.जबलपुर
छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गए।
आदरणीय तिवारी जी
ने क्राईस्ट चर्च स्कूल में संस्कृत
विषय का अध्यापन भी किया।
वे एक आदर्श कुशल शिक्षक रहे
किंतु कुछ समय बाद ही उन्होंने
विधि-जगत को अपना व्यवसाय
बना लिया।सन1964 से वकालत
करने लगे। 1985 से 88 तक वे
राज्य सरकार के उपमहाधिवक्ता
रहे। 1993 में हाई कोर्ट बार
एसोसिएशन के अध्यक्ष चुने गए।
1995 में मध्यप्रदेश शासन ने उन्हें
वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में नामित
किया। अपने ज्ञान और कानून की
बारीक समझ और प्रभावशाली
विवेचना के कारण हाईकोर्ट की
रूलिंग कमेटी में रखा गया।
कठिन से कठिन मसलों
पर उनके नीर-क्षीर परीक्षण -
विश्लेषण और तर्कों से उन्होंने
न्यायाधीशों औरमहाधिवक्ताओं
को भी प्रभावित किया नगर-
निगम अधिनियम की धारा 17
एवं 19 की व्याख्या को लेकर
जब दुविधा उत्पन्न हुई तब
तत्कालीन महाधिवक्ता के तर्क
सुनने के बावजूद भी माननीय
श्री तिवारी जी के विचार जानने
उन्हें कोर्ट मित्र के रूप में आमंत्रित
किया गया। इस अत्यंत जटिल
मामले में तिवारी जी की अद्भुत
तर्कपूर्ण दलीलों ने सबको प्रभावित
किया। उनकी यही दलीलें निर्णय
का आधार भी बनी, जो बाद में मील का
पत्थर साबित हुई। श्री
तिवारी जी का ज्ञान,चिंतन,
मनन ,कल्पना ,तर्कशक्ति
धारदार शब्द और ओजस्वी
वाणी की गूँज आज भी कोर्ट
मेंउनकी याद दिलाती है।किसी
कवि की ये पंक्तियां मानो उन्हीं
के लिए लिखी गईं हैं..
मनु नहीं यह मनु पुत्र है सामने
जिसकी कल्पना की जीभ में
भी धार होती है बाण ही होते
नहीं विचारों के केवल ....
स्वप्न के हाथ में भी तलवार
होती है।
हिंदी,अंग्रेजी,संस्कृत और उर्दू
साहित्य में उनका पूर्णअधिकार
था। निरंतर अध्ययन, चिंतन-
मनन उनका स्वभाव था। सुंदर
शब्दों का चयन,वाक्य-विन्यास,
स्पष्ट और शानदार अभिव्यक्ति
जैसे सभी आदर्श वक्ता के गुण
उनमें थे। उनके उध्दबोधनों में
कविता,श्लोक, शेरो-शायरी, कोटेशन,
उद्धरण श्रोताओं को
मंत्र मुग्ध कर देते थे। श्रोता
उनके प्रभावशाली व्याख्यान
को मानो सांस रोक कर सुनते
थे। साहित्य से तो उन्हें लगाव
था ही सांस्कृतिक एवं खेलकूद
गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में
भी उनकी अच्छी दखल थी
संस्कारधानी की अनेक संस्थाओं
को उनका मार्गदर्शनऔर संरक्षण
प्राप्त होता रहा। रंगमंच, शास्त्रीय संगीत की
जितनी ज्यादा उनमें समझ थी उतनी ही
गजलों की भी।शायद ही कोई
विधा ऐसी होगी जिसमें उनका
हस्तक्षेप न हो।
महाकौशल शिक्षा प्रसार
समिति जिसके द्वारा शासकीय
अनुदान प्राप्त चंचलबाई महिला
महाविद्यालय तथा अन्य
शैक्षणिक संस्थाएं संचालित हैं
उसके वे अध्यक्ष भी रहे।महाविद्यालय में
कार्यरत होने
एवं पारिवारिक संबंध होने के
नाते उनका भरपूर सानिध्य मुझे
मिला। उनका स्नेहिल प्रेमपूर्ण, मिलनसार,
हंसमुख विनोद-प्रिय
स्वभाव ने उन्हें कभी भी किसी को भी अपने
उनके विराट व्यक्तित्व से
दूर नहीं किया। यहीकारण था कि
छोटे बड़े सभी वय के लोगों में भी
अज़ीज़ रहे।कभी भी, किसी से भी,
किसी भी विषय पर घण्टो- घण्टों
चर्चा कर लोगों को अपने ज्ञान और
अनुभव से लाभान्वित कर देना
उनकी विशेषता थी। अत्यधिक
व्यस्त होने के बावजूद भी समय
के अभाव की बात उन्होंने कभी
नहीं की। समय की पाबंदी
उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी।
मिनट और सेकंड का हिसाब
रखने वाले श्री तिवारी जी सदैव
अपने कार्य क्षेत्र में निर्धारित
समय में उपस्थित हो जाते थे।
प्रातः सूर्योदय से पूर्व उठकर
पूजा-पाठ आदि कार्यों से निवृत
होकर समाचार-पत्र, पत्रिकाओं
का अध्ययन उनकी दिनचर्या
का नियमित हिस्सा थे। रात्रि
विश्राम पर जाने का कोई
निर्धारित समय नहीं था।
शॉर्टकट उन्हें पसंद नहीं था।
काम के प्रति लगन निष्ठा और
अनुशासन को वे सफलता का
सूत्र मानते थे। और यही संदेश
उन्होंने अगली पीढ़ी को भी दिया। वे कहा
करते थे कि -
समाज को समर्पित सिद्धांतवादी परिवार में
जन्मे
श्री राजेन्द्र तिवारी जी की पत्नी
श्रीमती गीता तिवारी नगर के
प्रसिद्ध शिक्षाविद एवं पूर्व महापौर पं.रामेश्वर
प्रसाद गुरुजी
की पुत्री थीं। ज्ञान और संस्कार
का प्रवाह निरंतर चलता रहा।पुत्र उद्यन
तिवारी जहां वकालत का कार्य देख रहे हैं ,वहीं
पुत्रवधु डॉ. शुभदा तिवारी चिकित्सा के क्षेत्र में
अपनी सेवाएं दे रही हैं। पुत्री
डॉ. ऋचा राठौर शिक्षाविद एवं
समाज सेविका हैं। उनकी एक
बेटी विदेश में अपने कार्यों में
संलग्न हैं।
बहुआयामी, जादुई
व्यक्तित्व वाले श्री राजेंद्र तिवारी
जी ने आने वाली पीढ़ियों के
लिए अनेक आदर्श स्थापित
किए। उनकी शख्सियत की
गूँज केवल कोर्ट में ही नहीं
वरन हर दिल में,हर तरफ सुनाई
देती है। ऐसे लोग अब बहुत
कम ही दिखाई देते हैं। ऐसे ही
व्यक्तित्व के लिए शायर इकबाल
ने लिखा है ..
हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पर रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।
सादर नमन ...

डॉ. वन्दना पाण्डेय दुबे प्राचार्य
चंचल बाई महिला महाविद्यालय जबलपुर।

हनुमान जयंती पर राउ स्थित 100 वर्ष पुराने हनुमान मंदिर में तीन दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

बजरंगबली के भक्तों ने भंडारे व लंगर में खुले हृदय से किया सहयोग

इंदौर (राउ)। देशभर में जहां हनुमान जयंती की धूम मची रही, वहीं इंदौर जिले के राउ क्षेत्र स्थित ऐतिहासिक एवं चमत्कारी हनुमान सदन मंदिर में तीन दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का अत्यंत भव्य आयोजन किया गया। यह अवसर श्रद्धा, भक्ति और सेवा का संगम बन गया जहाँ श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

इस पावन पर्व पर, श्री महंत रामभूषण दास जी महाराज की उपस्थिति एवं महामंडलेश्वर श्री रामगोपालदास महाराज जी पंचकुइया पीठाधीश्वर के विशेष सान्निध्य में मंदिर में हनुमान जी की नवीन, मनमोहक प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा विधिवत संपन्न हुई। यह प्रतिमा, मंदिर में पूर्व से विराजमान 100 वर्ष से भी अधिक प्राचीन मूर्ति के समीप स्थापित की गई।

हनुमान जी को विशेष चोला चढ़ाया गया एवं अत्यंत भव्य श्रृंगार कर दर्शनार्थ प्रस्तुत किया गया। इस ऐतिहासिक मंदिर के बारे में जानकारी देते हुए मंदिर से जुड़े भक्त श्री वरुण ठुकराल ने बताया कि यह मंदिर होलकर काल से ही अत्यंत प्रसिद्ध रहा है। राजवंशों से लेकर आम भक्त तक यहाँ पूजन और दर्शन के लिए आते रहे हैं। उन्होंने बताया कि यह मंदिर अत्यंत चमत्कारी माना जाता है — यहाँ आने वाला कोई भी भक्त चाहे कितना भी बड़ा संकट क्यों न झेल रहा हो, बजरंगबली की कृपा से उसके समस्त दुःख दूर हो जाते हैं। कार्यक्रम के दौरान भक्तों की भारी भीड़ उमड़ी। चारों ओर भंडारे एवं लंगर के आयोजन में भक्तों ने न केवल प्रसाद ग्रहण किया बल्कि खुले मन से दान कर अपने सेवाभाव का परिचय भी दिया। भक्तों का विश्वास है कि **हनुमान जी के नित्य दर्शन मात्र से ही जीवन के कष्ट समाप्त हो जाते हैं और सौभाग्य उदय होता है। तीन दिवसीय महोत्सव में भक्ति, सेवा और आत्मिक शांति की अनुभूति करते श्रद्धालुओं ने इस अवसर को अविस्मरणीय बना दिया।

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। थाना पनागर में शासकीय अस्पताल पनागर से सूचना मिली कि प्रकाश चंद तिवारी उम्र 70 वर्ष निवासी परियट पनागर को घर की डेयरी में भैंस द्वारा कचरने से शरीर में चोट आने से रात लगभग 11 बजे लाया गया था डाक्टर ने चैक कर प्रकाश चंद तिवारी केा मृत घोषित कर दिया। सूचना पर मर्ग कायम कर जांच में लिया गया।

दमोह के फर्जी डॉक्टर के प्रयागराज स्थित घर में मिली फर्जी डाक्यूमेंट बनाने की मशीनें

दमोह से कानपुर भी गई पुलिस टीम, पिता, भाई ने संबंध होने से इन्कार किया-आशंका है कि नरेंद्र यादव खुद के साथ दूसरों के भी फर्जी दस्तावेज बनाता था

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। मध्य प्रदेश के दमोह शहर में स्थित मिशन अस्पताल में सात मरीजों की सर्जरी के बाद मौत के मामले में गिरफ्तार फर्जी डॉक्टर नरेंद्र यादव उर्फ एन जॉन केम के उत्तर प्रदेश में प्रयागराज स्थित घर पर न फर्जी दस्तावजे बनाने के उपकरण भी बरामद किए गए हैं।

इससे आशंका है कि वह फर्जी दस्तावेज बनवाने के काम में भी लिप्त था। वहीं, कानपुर में उसके पिता और भाई ने उससे कोई संबंध न होने की बात कही है। दमोह की पुलिस अधीक्षक श्रुतकीर्ति सोमवंशी ने बताया कि पुलिस टीमें जांच की कड़ी में कानपुर और प्रयागराज भेजी गई थीं।

कई तरह के दस्तावेज मिले

प्रयागराज में ओमेक्स आनंद अपार्टमेंट के 511 नंबर प्लेट में नरेंद्र यादव को साथ ले जाकर तलाशी ली तो वहां अनेक प्रकार के दस्तावेज व दस्तावेज तैयार करने के उपकरण, कई प्रिंटर, कार्ड शीट व सील मिली हैं, जिसे जब्त किया गया है। माना जा रहा

उसके घर से कई प्रिंटर, कार्ड शीट व सील मिली हैं, जिन्हें जब्त किया गया है

है कि नरेंद्र ने इन्हीं की सहायता से न सिर्फ अपने फर्जी दस्तावेज तैयार किए, बल्कि यह आशंका भी बढ़ गई है कि इनके माध्यम से औरों के भी फर्जी दस्तावेज तैयार किए होंगे।

पुलिस अधीक्षक श्रुतकीर्ति के अनुसार, इसी तरह कानपुर गई दूसरी पुलिस टीम ने नरेन्द्र यादव के पिता और भाई से संपर्क किया तो उन्होंने बताया कि वह वर्ष 1996 से 1999 तक ही कानपुर में रहा है, उसके बाद न तो फिर कभी घर आया, न ही परिवार से उसका अभी तक कोई संपर्क है। कानपुर में अध्ययन करने वाले स्कूल से भी उसका रिकॉर्ड निकलवाया है, जिसमें भी उसका नाम नरेंद्र यादव ही बताया गया है।

आरोपित का दावा ब्रिटेन में की पढ़ाई

इस बीच, पुलिस पूछताछ में आरोपित फर्जी डॉक्टर नरेंद्र यादव अब ब्रिटेन में पढ़ाई किए जाने का दावा कर रहा है। उसकी बात की सच्चाई जाने के लिए पुलिस पत्राचार कर रही है। वहीं, जब्त दस्तावेजों में आधार कार्ड और पैन कार्ड भी उसके बदले हुए नाम से ही प्राप्त हुए है।

दमोह में 7 मरीजों की जान लेने वाला कथित डॉक्टर प्रयागराज से गिरफ्तार, फर्जी दस्तावेज से ली थी नौकरीदमोह में 7 मरीजों की जान लेने वाला कथित डॉक्टर प्रयागराज से गिरफ्तार, फर्जी दस्तावेज से ली थी नौकरी

मानवाधिकार आयोग ने दमोह प्रशासन को जिम्मेदार बताया

वहीं, दमोह से जांच करके रवाना हुई राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की टीम अपनी प्राथमिक जांच रिपोर्ट तैयार की है। इसमें आयोग ने मिशन अस्पताल में सात मौत के लिए जिला प्रशासन को भी जिम्मेदार ठहराया गया है।

आयोग के सदस्य प्रियांक कानूनगो ने बताया कि अभी प्राथमिक जांच में मिशन अस्पताल में जो लापरवाही सामने आई है, उसके लिए जिला प्रशासन इसलिए जिम्मेदार है, क्योंकि उसने कार्रवाई में तत्परता नहीं बरती है। प्रशासन को मिशन अस्पताल को बंद कर देना चाहिए था लेकिन इस मामले में अभी तक किसी भी प्रकार की कोई कार्रवाई नहीं की गई।

पुरानी रंजिश पर प्राणघातक हमला करने वाले दोनों आरोपी भाई चंद घंटों में गिरफ्तार

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। थाना संजीवनीनगर चौकी धनवंतरी नगर में दिनांक 12/4/25 की रात अनिकेत राव उम्र 25 वर्ष निवासी दुर्गा मंदिर के पास बड़ा पत्थर तिलवारा ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह ड्रायविंग का काम करता है दिनांक 12-4-25 को रात लगभग 9-25 बजे अपने दोस्त राजा खान एवं अम्मू यादव के साथ अंधमूक वायपास गये थे तभी बड़ा मदार छल्ला स्लाटर हाउस निवासी शफीक खान एवं सलीम खान जिन्हें वह पहले से जानता है दोनों लाल रंग की एक्सिस में आये जिनका राजा खान से 2 वर्ष पहले बड़ा मदार छल्ला में मोटर सायकल खड़ी करने की बात पर से विवाद हुआ था , इसी बुराई पर से राजा खान को गाली गलौज करते हुये राजा खान को मारने दौड़े शफीक हाथ में तलवार लिये था, वह एवं राजा खान तथा अम्मू यादव तीनों बचने के लिये भागे, वह दौड़ नहीं पाया तो शफीक खान ने जान से मारने की नीयत से तलवार से सिर पर मारा तभी उसने हाथ से बचाव किया जिससे वायें हाथ की भुजा में चोट आयी वह वहीं गिर गया तो सलीम ने हाथ मुक्कों से मारपीट कर वायें पैर में चोट पहुँचा दी तथा भाग गये। रिपोर्ट पर धारा 296, 109, 3(5)बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

पुलिस अधीक्षक जबलपुर श्री सम्पत उपाध्याय (भा.पु.से.) द्वारा घटित हुई घटना को गम्भीरता से लेते हुये आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी हेतु आदेशित किये जाने पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जोन 2 श्री समर वर्मा, एवं नगर पुलिस अधीक्षक गोरखपुर श्री एच.आर.पाण्डे के मार्गनिर्देशन में थाना प्रभारी संजीवनी नगर श्री बी.डी. द्विवेदी के नेतृत्व में टीम गठित कर लगायी गयी।

गठित टीम द्वारा सरगर्मी से तलाश करते हुये दोनों आरोपी सलीम अहमद उम्र 24 वर्ष एवं शफीक अहमद उम्र 27 वर्ष दोनों निवासी बड़ा मदार छल्ला हनुमानताल दोनों भाईयों को अभिरक्षा में लेते हुये आरोपी शफीक अहमद से घटना में प्रयुक्त तलवार जप्त करते हुये प्रकरण में दोनों आरोपियों की विधिवत गिरफ्तारी की जाकर प्रकरण विवेचना में लिया गया।

उल्लेखनीय भूमिका-प्राणघातक हमला करने वाले दोनों आरोपियों को चंद घंटो में पकडने में थाना प्रभारी संजीवनी नगर श्री बी.डी. द्विवेदी के नेतृत्व में चौकी प्रभारी धनवंतरी नगर उप निरीक्षक दिनेश गौतम, सहायक उप निरीक्षक अनिल सिंह परिहार, आरक्षक मनोज मेश्राम की सराहनीय भूमिका रही।

अकाल मृत्यु

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। थाना मझगवॉ में सुबह ग्राम धनगवॉ में एक महिला द्वारा जहरीली वस्तु का सेवन करने से मृत्यु होने की सूचना पर ग्राम धनगवॉ पहुंची पुलिस को राजभान गौतम उम्र 48 वर्ष निवासी ग्राम धनगवॉ ने बताया कि वह खेती किसानी करता है उसके 2 बच्चे हैं उसकी पत्नि संगीता का शादी के पूर्व से मानसिक संतुलन ठीक नहीं था, ससुरल वाले व उसके द्वारा पत्नि का जबलपुर में इलाज चल रहा था , कभी कभी घर से चली जाती थी तथा किसी के भी साथ मारपीट कर देती थी,

दिनॉक 12-4-25 को दोपहर में सब्जी बेचने बघराजी बाजार गया था उसका बेटा एवं बेटी माता पिता के साथ मोहल्ले में थे। वह रात में बाजार से लौट कर माता पिता के घर खाना खाने पहुचा, जहॉ से वापस अपने घर आया तो देखा कि पत्नि संगीता आंगन मे चित्त हालत में मृत अवस्था में पड़ी थी। घर के अंदर सल्फास की 2 डिब्बी 1 खाली एवं 1 भरी मिली। उसकी पत्नि संगीता की सल्फास की गोली खा लेने से मृत्यु हो गयी है। सूचना पर मर्ग कायम कर जांच में लिया गया।

प्रताड़ना का केस वापस लेने हेतु धमकाने वाले आरोपी पति के विरूद्ध प्रकरण दर्ज

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। थाना मदन महल में दोपहर में श्रीमती अतिशाम खान उम्र 30 वर्ष निवासी आशीष अपार्टमेंट साउथ सिविल लाईन ने लिखित शिकायत की कि उसकी शादी वर्ष 2021 में अनीश अहमद खान निवासी पोलीपाथर ग्वारीघाट से मुस्लिम रीति रिवाज से हुयी थी । शादी के बाद से ही पति उसके साथ मारपीट कर प्रताड़ित करने लगा जिसकी रिपोर्ट उसने दिनांक 29-6-24 को थाना हडपसर जिला पुणे (शहर) में की थी जिसका प्रकरण पुणे न्यायालय में चल रहा है उसका पति उसे लगातार प्रताड़ित कर फोन से केस वापस लेने की धमकी दे रहा , केस वापस नहीं लेने पर जान से मारने की धमकी देता है। पति कई बार उसके सिविल लाईन स्थित घर आकर प्रकरण वापस लेने की बात को लेकर जान से मारने की धमकी देकर गाली गलौज किया है उसे जानकारी लगी कि उसके पति अनीश अहमद खान ने अपनी पूर्व महिला दोस्त निवासी रजा चौक से निकाह (शादी) कर लिया है।

लिखित शिकायत पर आरोपी अनीश अहमद खान धारा 232, 296, 351(3) बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

हनुमान जन्मोत्सव में भण्डारे एवं भव्य शोभा यात्रा उपरांत चकाचक हुई सड़कों की सफाई - निगमायुक्त प्रीति यादव

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। शहर में हनुमान जन्मोत्सव के दौरान नगर निगम के स्वच्छता के सिपाहियों ने सफाई के क्षेत्र में भण्डारे एवं शोभा यात्रा के मार्ग पर उत्कृष्ट कार्य किया गया। इस अवसर पर महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू ने कहा है कि शहर की सफाई व्यवस्था में काफी सुधार हुआ है। टीम बेहतर ढंग से त्योहारों में काम किया है। निगमायुक्त श्रीमती प्रीति यादव ने बताया कि नगर निगम की पूरी स्वच्छता टीम ने हनुमान जन्मोत्सव पर भण्डारे एवं भव्य शोभा यात्रा के उपरांत रातों रात मार्ग चकाचक कर दिया। इसके लिए उनके द्वारा पूरे शहर में स्वच्छता के सिपाहियों की टीम तैनात की गई थी। जिसके परिणाम स्वरूप आज संस्कारधानी की सड़कें चमचमाती नजर आई। उपायुक्त संभव अयाची एवं स्वास्थ्य अधिकारी संदीप जायसवाल ने बताया कि हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर शहरभर में जगह-जगह भण्डारे एवं शोभा यात्राएँ निकाली गई। उन्होंने बताया कि भण्डारे एवं शोभा यात्रा निकलने के तुरंत बाद ही स्वच्छता टीम के सदस्यों द्वारा रातों रात सफाई का कार्य कर मार्ग को चकाचक कर दिया। उन्होंने बताया कि मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक, स्वास्थ्य निरीक्षक एवं कर्मचारियों के द्वारा अपने-अपने संभाग में भँडारे एवं शोभा यात्रा के उपरांत त्वरित गति से पुन: सफाई आरंभ की गई जिसमें रोड स्विपिंग मशीन एवं श्रमिकों को लगाकर तत्काल सफाई कराई गई एवं कचरा, पॉलिथीन, पाउच, केले के छिलके, प्रसाद की सामग्री एवं अन्य कचरा को तत्काल उठाकर रोड को पुन: लोगों के आवागमन के लिए सुचारू पूर्वक स्वच्छ कर पूरे जबलपुर शहर के स्वच्छ भारत मिशन के सपने को साकार किया। सफाई कार्य दौरान सहायक स्वास्थ्य अधिकारी अर्जुन यादव, पोला राव, धर्मेंद्र राज आदि उपस्थित रहे।

महिला के साथ गाली गलौज कर मारपीट

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। थाना कटंगी में श्रीमती सरिता राजपूत उम्र 38 वर्ष निवासी ग्राम भिलौदा वर्तमान पता ग्राम पौनिया ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि उसका मायक ग्राम पौनिया में है अपने मायके ग्राम पौनिया मां सज्जन बाई के घर आयी थी। मॉ का प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत नया मकान बन रहा है, आज सुबह लगभग 11-30 बजे मकान की नीव बनाने के लिये अपनी सरहदी में चूना डाल रहे थे तभी पड़ौस में रहने वाले चाचा छुट्टन राजपूत डंडा लेकर आये और मां सज्जन बाई के साथ गाली गलोज करते हुये बोले कि तुम्हारा मकान यहां से नहीं बनेगा कहकर डंडा से हमलाकर मां के सिर पीठ में चोट पहुँचा दी जिससे मां गिर गयी तभी उसका चचेरा भाई आदर्श राजपूत भी डंडा लेकर आया और गाली गलौज करते हुये मां के पीठ, कमर में चोट पहुँचा दी, चाची सविता राजपूत भी गाली गलौज करने लगीं वह परछी से बाहर आकर बीचबचाव करने लगी तो आदर्श राजपूत ने डंडा से हमलाकर सिर में चोट पहुँचा दी चाची ने बाल पकड़कर झूमाझपटी की तथा तीनों जान से मारने की धमकी दिये।

प्लाट में हिस्सा हक मांगने पर बेटों ने पिता को किया लहुलुहान

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। थाना पाटन में रात्रि नेबा चौधरी उम्र 45 वर्ष निवासी चौधरी मोहल्ला पाटन ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह झाड़ू बनाकर बेचता है दिनांक 12-4-25 को रात लगभग 8 बजे अपने घर पर था बड़ा लड़का राकेश एवं मंझला लड़का मनीष दोनों उससे प्लाट में हिस्सा हक मांगने लगे एवं प्लाट अपने नाम कराने को कहने लगे, उसने मना किया तो दोनों उसके साथ गाली गलोज करने लगे, उसने गालियां देने से मना किया तो दोनों हाथ मुक्कों से मारपीट करने लगे एवं उसे उठाकर पटक दिया जिससे हाथ, पसली में चोट आयी मारपीट कर दोनों लड़के उसे जान से मारने की धमकी दिये। रिपोर्ट पर धारा 296, 115(2), 351(3), 3(5) बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

थाना तिलवारा में आज दिनांक 13-4-25 की रात अजय चक्रवर्ती उम्र 30 वर्ष निवासी कुम्हार मोहल्ला तिलवारा ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह मुर्गा चिकन की दुकान चलाता है दिनांक 12-4-25 को रात लगभग 10-30 बजे अपने घर के बाहर टहल रहा था तभी त्रिपुरी चौक गढ़ा में उसकी बुआ का लड़का करन चक्रवर्ती शराब पीकर आया और उससे किसी बात पर से हसी मजाक करने लगा, उसने मजाक करने से मना किया तो करन उसके साथ गाली गलौज करने लगा, गालियां देने से मना किया तो डंडे से हमलाकर हाथ में चोट पहुँचा दी तथा उसे धक्का देकर जान से मारने की धमकी देते हुये भाग गया। रिपोर्ट पर धारा 296, 115, 351(3) बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

थाना कुण्डम में दिनांक 12-4-25 की रात्रि विकास पटैल उम्र 23 वर्ष निवासी गाम पौड़ी पोड़ा थाना सिहोरा ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह ग्राम बघराजी बस स्टेण्ड शराब दुकान में काम करता है दिनांक 12-4-25 की सुबह लगभग 9 बजे अपने साथी सचिन असाटी , हरीश परमार के साथ शराब दुकान का नया ठेका होने पर हम ग्राम जमुनिया नारायणपुर, लहसर एवं पटना कला होते हुये जैसे ही लगभग 11-30 बजे पिपरिया खेर माई के पास चाय टपरा के पास पहुँचे जहां टपरा में प्रमोद पटैल, बृंदा पटेल, आशीष पटेल मिले एवं रोड़ में आकर रोके तथा बोले कि कि तुमने मेरे भाई की शराब पकड़वायी है कहते हुये तीनों गाली गलौज करते हुये हाथ मुक्कों एवं डंडे से मारपीट करने लगे उसके वायें पैर, हाथ सिर सीना पेट में चोट आ गयी है। मारपीट कर तीनों जान से मारने की धमकी दिये।

जबलपुर में आंधी-बारिश का अलर्ट

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। एमपी में आज जबलपुर सहित 24 जिलों में आंधी-बारिश होने के आसार है। सतना में आज सुबह चार बजे से दो घंटे तक झमाझम बारिश हुई है। वहीं शिवपुरी-भिंड में भी देर रात पानी गिरा, यहां तक कि शिवपुरी में आकाशीय बिजली गिरने से एक किसान की 11 भैंस की मौत हो गई।

मौसम विशेषज्ञों के अनुसार तीन सिस्टम सक्रिय होने से हल्की बारिश व आंधी का दौर रहेगा। पश्चिम विक्षोभ, साइक्लोनिक सकुर्लेशन व ट्रफ की एक्टिविटी कम होने के बाद तेज गर्मी का दौर शुरु होगा। 15 अप्रेल को मौसम साफ होने की संभावना है, इसके बाद 16 अप्रेल से लू चलेगी। आज प्रदेश के 24 जिलो में मौसम में बदलाव रहेगा जबलपुर, ग्वालियर, भिंड, मुरैना, दतिया, श्योपुर, शिवपुरी, सागर, छतरपुर, दमोह, पन्ना, कटनी, सतना, मैहर, उमरिया, मंडला, डिंडौरी, बालाघाट, अनूपपुर, शहडोल, रीवा, मऊगंज, सीधी व सिंगरौली में गरज-चमक, आंधी व बारिश होने के आसार है। एक दिन पहले भी प्रदेश के कई शहरों में बारिश हुई है, सुबह इंदौर में हल्की बारिश हुई, धार के बदनावर सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में आधा घंटा तक तेज पानी गिरा। भोपाल में बादल छाए रहे लेकिन दोपहर होते होते धूप तेज हो गई। हरदा, रायसेन, नर्मदापुरम के पचमढ़ी, छिंदवाड़ा, पांढुर्ना, विदिशा, सागर, डिंडौरी, सीधी, मंडला, बालाघाट, सिंगरौली, देवास, सीहोर में आकाशीय बिजली चमकने, तेज आंधी चलने के साथ हल्की बारिश हुई। मौसम में अचानक बदलाव के कारण प्रदेश के शहरों में तापमान में भी गिरावट आई है, यदि बड़े शहरों की बात की जाए तो जबलपुर में 37.06 डिग्री, भोपाल 37.08, इंदौर 36.8, ग्वालियर 36.07 व उज्जैन में 38 डिग्री तापमान रिकार्ड किया गया है।

सड़क दुर्घटना में चार लोग घायल

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। थाना कटंगी में रात्रि मोतीलाल काछी उम्र 25 वर्ष निवासी ग्राम मढ़ियादो जिला दमोह ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह मजदूरी का काम करता है दिनांक 12-4-25 को वह एवं उसका भाई बब्लू काछी एवं साथ में काम करने वाले मंगल अहिरवार, रूबीना बानो, आमिर खान, राजा खान के साथ गेहू की कटाई करने दमोह से ग्राम पड़रिया आये थे ग्राम पड़रिया से काम करने के बाद बब्लू काछी एवं मंगल अहिरवार हनुमान जयंती का कटंगी में जुलुस देखने के लिये कहने लगे, आमिर खान और रूबीना बानो दरगाह जाने के लिये बोले, हम लोग पड़रिया से कटंगी पैदल आ रहे थे दरगाह हजरत जिंदा शाह वली मजार के सामने कटंगी पहुँचे शाम लगभग 7-30 बजे दमोह तरफसे आ रही पिकअप क्रमंक एमपी 20 जेड एफ 2465 का चालक तेज गति लापरवाही पूर्वक चलाते हुये उसके भाई बब्लू काछी, मंगल अहिरवार, रूबीना बानो एवं आमिर को पीछे से टक्कर मार दिया जिससे चारों को हाथ पैर एवं शरीर में चोटें आई है। चारों घायलों को उपचार हेतु राजा खान के साथ जबलपुर भिजवाया है रिपोर्ट पर धारा 281, 125 ए बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

पमरे भारत स्काउट्स एवं गाइड्स का जबलपुर में एक दिवसीय शिविर का आयोजन सम्पन्न

जबलपुर (नगर प्रतिनिधि)। पश्चिम मध्य रेल भारत स्काउट्स एवं गाइड्स जबलपुर मंडल द्वारा रविवार 13 अप्रैल 2025 को एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया. जिसमें जिला कार्यालय के पदाधिकारी अपर मंडल रेल प्रबंधक सुनील टेलर (मुख्य जिला आयुक्त स्काउट), वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी सुबोध विश्वकर्मा (जिला आयुक्त स्काउट), मंडल सिंगल एवं दूरसंचार इंजीनियर राजश्री द्विवेदी (जिला आयुक्त गाइड), सहायक कार्मिक अधिकारी सच्चिपति नंदन, अनिल चौबे (जिला सचिव), संजीव तिवारी(सहा जिला सचिव), विमलेश तिवारी (जिला संगठन आयुक्त स्काउट), राहुल कश्यप (जिला प्रशिक्षण आयुक्त स्काउट) के निर्देश पर जबलपुर के कुल 36 सदस्यों ने भाग लिया. इस शिविर में स्काउट और गाइड को ध्वजा शिष्टाचार, कैम्प क्राफ्ट, टेंट पिचिंग, पर्यावरण के विषय पर रेलवे कॉलोनी में पैदल हाइक कराए गए इसमें शुभम कुमार कुशवाहा, ऋषिकेश राव, अब्दुल वाजिद मंसूरी, देवेंद्र कुमार कतिया, के.के. उपाध्याय के कुशल मार्गदर्शन में कैम्प का संचालन किया गया.

अकाल मृत्यु

जबलपुर.- थाना पनागर में शासकीय अस्पताल पनागर से सूचना मिली कि प्रकाश चंद तिवारी उम्र 70 वर्ष निवासी परियट पनागर को घर की डेयरी में भैंस द्वारा कचरने से शरीर में चोट आने से रात लगभग 11 बजे लाया गया था डाक्टर ने चैक कर प्रकाश चंद तिवारी केा मृत घोषित कर दिया। सूचना पर मर्ग कायम कर जांच में लिया गया।

स्वात्ताधिकारी मुद्रक प्रकाशक कृष्णकांत सक्सेना की ओर से श्री बालाजी प्रिटंर्स, प्लाट नं.21,सेक्टर-एच,इंडस्ट्रियल एरिया,गोविंदपुरा भोपाल से मुद्रित तथा मकान नंबर 358 साठियां कुंआ जबलपुर से प्रकाशित। ब्यूरो प्रमुख श्री विलक्षण सक्सेना, सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जबलपुर रहेगा। मो.नं. 9300696096, भोपाल 9425025999